E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 184 | प्रयागराज, बुधवार 11 नवम्बर, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ट्रम्प बोले- हेगसेथ ने दो जंग जीतीं, उन्हें क्यों हटाएं,ईरान से युद्ध जरूरी था- महाभियोग की मांग करने वाले सांसद को लूजर कहा

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ का बचाव करते हुए कहा है कि उन्होंने दो युद्ध जीते हैं, ऐसे में उन्हें पद से हटाने की मांग क्यों की जा रही है। उन्होंने कहा ईरान से युद्ध जरूरी था। साथ ही, उन्होंने ने हेगसेथ पर महाभियोग चलाने की मांग को खारिज करते हुए इसे गलत बताया। उन्होंने महाभियोग प्रस्ताव लाने वाले रिपब्लिकन सांसद थॉमस मैसी को 'लूजर' यानी हारा हुआ व्यक्ति कहा। ट्रम्प ने कहा कि ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान में अमेरिका के सिर्फ 18 सैनिक मारे गए, जबकि वियतनाम युद्ध में 65 हजार लोगों की जान गई थी। अमेरिका ईरान में 7 महीने से अभियान चला रहा है, जबकि वियतनाम में अमेरिकी सेना 21 साल तक रही थी। ट्रम्प ने कहाः- 'वियतनाम, इराक और अफगानिस्तान युद्ध चलाने वाले लोगों पर महाभियोग क्यों नहीं चलाया गया? उन युद्धों में हजारों लोगों की जान गई और कुछ हासिल भी नहीं हुआ।' ट्रम्प ने महाभियोग प्रस्ताव लाने वाले



केंटकी के रिपब्लिकन सांसद थॉमस मैसी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि मैसी पार्टी के अच्छे बिलों का भी विरोध करते हैं और संसद का समय बर्बाद करते हैं।हेगसेथ बोले- जरूरत पड़ने पर ईरान पर दोबारा हमला करेंगेः- रक्षा मंत्री हेगसेथ ने भी ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई को सही ठहराया। उन्होंने कहा कि ट्रम्प का फैसला सही था और जरूरत पड़ने पर वे दोबारा ऐसा ही करेंगे। हेगसेथ के मुताबिक, ईरान परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा था। उसने मिसाइलों की सुरक्षा व्यवस्था भी मजबूत कर ली थी, जिससे उसके परमाणु कार्यक्रम को रोकना मुश्किल हो गया था। उन्होंने दावा किया कि ट्रम्प प्रशासन ने ऑपरेशन मिडनाइट हैमर और ऑपरेशन एपिक फ्यूरी के जरिए ईरान के परमाणु ठिकानों को नुकसान पहुंचाया और उसे परमाणु हथियार हासिल करने से रोका। हेगसेथ से पूछा गया कि क्या रिपब्लिकन सांसद इस हफ्ते महाभियोग प्रस्ताव को रोकने के लिए पर्याप्त वोट जुटा पाएंगे। इस पर उन्होंने कहा, 'हमें इसकी चिंता नहीं है।' हेगसेथ पर गलत तरीके से युद्ध शुरू करने का आरोपः-रिपब्लिकन सांसद थॉमस मैसी ने सोमवार को अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में हेगसेथ के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पेश किया था। मैसी ने आरोप लगाया कि हेगसेथ ने अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल किया और ईरान के खिलाफ युद्ध शुरू करने के लिए गैरकानूनी आदेश दिए। अमेरिकी संसद के नियमों के मुताबिक, इस प्रस्ताव पर बुधवार तक शुरुआती वोटिंग कराना जरूरी है। इससे पहले हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता हकीम जेफ्रीज ने भी हेगसेथ पर महाभियोग चलाने की मांग का समर्थन किया था। हेगसेथ बोले- युद्ध रोकने का फैसला ट्रम्प करेंगेः- हेगसेथ ने ईरान के खिलाफ युद्ध खत्म करने की कोई समय-सीमा या शर्त तय नहीं की। हालांकि, उन्होंने कहा कि फिलहाल अमेरिका सैन्य कार्रवाई में मजबूत स्थिति में है। उन्होंने बताया कि ट्रम्प जब चाहें सैन्य अभियान रोक सकते हैं। ईरान को यह चेतावनी भी दी गई है कि वह परमाणु सामग्री किसी दूसरे देश को न सौंपे। हेगसेथ ने साफ किया कि सैन्य कार्रवाई जारी रखने या रोकने का आखिरी फैसला ट्रम्प ही लेंगे।

रिपोर्ट-चुनाव से पहले ईरान पर हमला करना चाहते थे नेतन्याहू,मोसाद चीफ के साथ बनाया था प्लान, ट्रम्प को भनक लगी तो हमला रुका

तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अक्टूबर में हुए चुनाव से ठीक पहले ईरान पर हमला करना चाहते थे। इजराइली न्यूज चैनल-12 ने शुक्रवार को अपनी रिपोर्ट में यह दावा किया। रिपोर्ट के अनुसार नेतन्याहू ने इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के चीफ रोमन गोफमैन के साथ मिलकर योजना बनाई थी। लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प को इसकी भनक लग गई। इसके बाद उन्होंने दखल देकर हमले की योजना रुकवा दी। रिपोर्ट के मुताबिक, इजराइल की सेना और सुरक्षा से जुड़े कई बड़े अधिकारी नेतन्याहू की योजना के खिलाफ थे। उन्हें डर था कि हमला किया तो ईरान जवाबी हमला कर सकता है। इससे दोनों देशों के बीच तनाव और बढ़ जाता। आशंका थी कि 27 अक्टूबर को होने वाला चुनाव भी टल जाता। अधिकारियों की असहमति के बावजूद नेतन्याहू ने योजना पर काम जारी रहा। चैनल-12 के मुताबिक इजराइल के एक सुरक्षा अधिकारी ने



जल्दबाजी में ऐसा कदम उठाया, जिससे अमेरिका को इस योजना के बारे में पता चल गया। अधिकारी ने क्या कदम उठाया था यह स्पष्ट नहीं किया गया ने उसी समय साफ कर दिया था कि इजराइली चुनाव से पहले ईरान पर हमला करने की कोई योजना नहीं थी। ईरान पर कार्रवाई को लेकर नेतन्याहू और है। पीएम नेतन्याहू के दफ्तर ने इस खबर को गलत बताया है। उसका कहना है कि प्रधानमंत्री इजराइली सेना के प्रमुख एयाल जमीर के बीच तनाव की खबरें पहले भी सामने आई थीं। 25 अक्टूबर को चैनल-12 ने बताया था कि नेतन्याहू ने सेना को एक ऐसा आदेश दिया था, जिससे ईरान के साथ लड़ाई फिर शुरू हो सकती थी। सेना प्रमुख जमीर ने इस आदेश को मानने के इंकार कर दिया था। उन्होंने इस पर दोबारा चर्चा करने और प्रधानमंत्री से लिखित आदेश मांगा था। वह यह भी चाहते थे कि कार्रवाई को कानूनी मंजूरी मिलने के दस्तावेज दिए जाएं। रिपोर्ट के मुताबिक सेना के बड़े अधिकारियों को शक था कि नेतन्याहू ईरान के मुद्दे का इस्तेमाल चुनाव में फायदा उठाने के लिए करना चाहते हैं। उन्हें डर था कि चुनाव से पहले कोई कार्रवाई हुई तो हालात बिगड़ सकते हैं। नेतन्याहू ने उस समय इन खबरों को भी बकवास बताया था।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

पोलैंड के क्राको शहर में भीसड़ गोलीबारी, 6 लोगों की मौत-15 घायल, पुलिस ने हमलावर को गोली मारा

पोलैंड। पोलैंड के क्राको शहर में शनिवार को गोलीबारी हुई। इसमें 6 लोगों की मौत हो गई जबकि 15 लोग घायल हो गए। मरने वालों में 4 महिलाएं और 2 पुरुष शामिल हैं। पुलिस के मुताबिक 24 साल का एक युवक कार से मेन मार्केट स्क्वायर पहुंचा और वहां मौजूद लोगों पर गोलियां चलाने लगा। हमलावर ने सेना जैसी वर्दी, हेलमेट और बॉडी आर्मर पहन रखा था। जब उसे रोकने की कोशिश की गई तो उसने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने हमलावर को गोली मारकर घायल कर दिया। अस्पताल में हमलावर का इलाज जारी है। उसकी पहचान सार्वजनिक नहीं की गई है। हमलावर ने अलग-अलग जगह पर लोगों को निशाना बनायाः- क्राको शहर की पुलिस की प्रवक्ता कैटार्जिना सिस्तो ने बताया कि हमलावर के पास एक बड़ी बंदूक थी, जिसका इस्तेमाल सेना में



किया जाता है। पुलिस को उसकी कार से कई और हथियार और गोलियां भी मिली हैं। घायल होने के बाद भी वह लगातार गोली चला रहा था। क्राको पोलैंड का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यहां हर साल करीब डेढ़ करोड़ पर्यटक आते हैं। इनमें से ज्यादातर शहर के मेन स्क्वायर घूमने पहुंचते हैं। पुलिस ने बताया कि हमलावर कार लेकर मेन स्क्वायर के आसपास घूमता रहा और अलग-अलग जगहों पर लोगों को निशाना बनाया। इसलिए कई जगहों पर लोग घायल हुए। हमलावर ने अकेले ही इस घटना को अंजाम दिया है। पोलैंड में बंदूक रखने का चलन बढ़ रहा हैः-पोलैंड की आबादी करीब 3.7 करोड़ है। यहां करीब 4.11 लाख लोगों के पास बंदूक रखने का लाइसेंस है। हाल के वर्षों में बंदूक रखने में लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। पोलैंड में इस तरह की सामूहिक गोलीबारी की घटनाएं कम होती हैं। हालांकि, अक्टूबर में देश के माजोविया इलाके के तीन स्कूलों में चार दिन के भीतर हमले हुए थे। इनमें एक व्यक्ति की मौत हुई थी और कई लोग घायल हुए थे। घायलों में बच्चे भी शामिल थे। प्रधानमंत्री डोनाल्ड टस्क ने गोलीबारी के दौरान कार्रवाई करने वाले पुलिसकर्मियों की तारीफ की। राष्ट्रपति कारोले नवरोत्स्की ने मृतकों, घायलों और उनके परिवारों के प्रति संवेदना जताई।

ट्रम्प बोले-हुआंग को नहीं पता था महिला चीनी जासूस है,एनवीडिया के सीईओ अच्छे इंसान हैं

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने सोमवार को एनवीडिया के सीईओ जेन्सन हुआंग को लेकर कहा कि हुआंग को इस बात की जानकारी नहीं थी कि जिस महिला से उनका अफेयर है, वह चीनी जासूस होगी। ट्रम्प ने हुआंग को अच्छा इंसान बताया और कहा कि उन्हें उम्मीद है कि अमेरिकी सुरक्षा को इससे कोई खतरा नहीं हुआ होगा। वहीं, चीन ने जासूसी के आरोपों



को बेबुनियाद बताते हुए खारिज कर दिया है। व्हाइट हाउस में मीडिया से बातचीत में ट्रम्प ने कहा कि इस मामले के बारे में सुनकर उन्हें हैरानी हुई। वह हुआंग को लंबे समय से जानते हैं और उन्हें एक अच्छे इंसान के तौर पर देखते हैं। ट्रम्प ने बताया कि उन्होंने खुद हुआंग से इस बारे में बात की थी और पूछा था कि क्या उन्हें महिला के चीन की खुफिया एजेंसी से कथित संबंधों के बारे में पता था। फॉक्स न्यूज के मुताबिक, ट्रम्प ने कहा, 'हुआंग ने मुझसे कहा कि उन्हें बिल्कुल पता नहीं था कि वह महिला जासूस है। मैं उनकी बात पर सच में भरोसा करता हूं।' ट्रम्प बोले- हुआंग की चिप तकनीक 10 साल आगेः-ट्रम्प ने एनवीडिया की तकनीक और हुआंग की इंजीनियरिंग क्षमता की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि कंपनी की ब्लैकवेल चिप तकनीक दुनिया में सबसे आगे है। इसकी बनावट इतनी जटिल है कि दूसरी कंपनियां इसकी नकल भी नहीं कर सकतीं। ट्रम्प ने कहा-'उनके पास ऐसी चिप है जिसकी तकनीक 10 साल आगे है। वह कमाल के इंसान हैं।' इस मामले से अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा होने की आशंका पर ट्रम्प ने कहा कि फिलहाल उन्हें ऐसी किसी समस्या की जानकारी नहीं है। अगर कोई खतरा सामने आता है तो सरकार इसकी जानकारी देगी।ट्रम्प ने यह भी कहा कि उन्होंने इस विवाद पर हुआंग का बयान पढ़ा है। उनके मुताबिक, हुआंग इस मामले से काफी दुखी हैं। उन्हें सबसे ज्यादा चिंता अपनी पत्नी और परिवार की है जिन्हें इस विवाद से तकलीफ पहुंच रही है। एनवीडिया बोर्ड भी जांच कर रहाः-एनवीडिया का बोर्ड इस बात की भी जांच कर रहा है कि कहीं हुआंग किसी विदेशी खुफिया एजेंसी के जाल में तो नहीं फंस गए थे।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

ईयू रिपोर्ट- फ्रांस प्रदर्शनों में रूस-इजराइल-अमेरिका का दखल,सोशल मीडिया पर फर्जी पोस्ट फैलाकर लोगों का गुस्सा भड़काया

पेरिस। फ्रांस में महंगाई और शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ हुए प्रदर्शनों के बीच सोशल मीडिया



पर फर्जी पोस्ट और वीडियो फैलाए गए। यूरोपीय संघ (ईयू) की एक आंतरिक रिपोर्ट के मुताबिक, रूस से जुड़े नेटवर्क ने प्रवासियों के खिलाफ नफरत फैलाकर लोगों को भड़काने की कोशिश की। इसके अलावा अमेरिका का दक्षिणपंथी आंदोलन है, जो राष्ट्रपति ट्रम्प और उनकी राजनीति का समर्थन करता है। फ्रांस के पीएम ने श्रमिक संगठनों के साथ बैठक की:-फ्रांस के प्रधानमंत्री सेबेस्टियन लेकोर्नू ने लगातार हो रहे प्रदर्शनों के बीच सोमवार को उद्योग संगठनों और श्रमिक यूनियनों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। बैठक में लोगों की खरीदने की ताकत बढ़ाने और वेतन से जुड़ी समस्याओं पर चर्चा हुई। सरकार न्यूनतम वेतन में एक बार फिर बढ़ोतरी करने पर विचार कर रही है। इसका मकसद महंगाई से परेशान लोगों को राहत देना है। फ्रांस से शुरू हुए प्रदर्शन 31 देशों तक पहुंचेः-दुनिया भर में हिंसा और विरोध प्रदर्शनों पर नजर रखने वाली संस्था एसीएलईडी के आंकड़ों के मुताबिक, 15 सितंबर से 30 अक्टूबर के बीच यूरोप के 31 देशों में महंगाई और शिक्षा व्यवस्था को लेकर 1700 से ज्यादा प्रदर्शन हुए। इनकी शुरुआत फ्रांस से हुई थी। फ्रांस में महंगाई और शिक्षा व्यवस्था को लेकर लोगों का गुस्सा सड़कों पर उतरा। इसके बाद यह विरोध स्पेन और इटली जैसे देशों में भी फैल गया। यहां हजारों लोगों ने महंगे घरों और रोजमर्रा की चीजों की बढ़ती कीमतों के खिलाफ प्रदर्शन किया। यानी लोगों की आर्थिक परेशानियां अब कई देशों में सरकारों के लिए चुनौती बन रही हैं। यूरोप के कई देशों में आने वाले दिनों में विरोध बढ़ने के आसार हैं। स्पेन में ट्रेड यूनियनों ने 11 नवंबर को हड़ताल रखी है। वहीं, इटली के सबसे बड़े श्रमिक संगठन ने महंगाई के खिलाफ 20 नवंबर को देशव्यापी हड़ताल का ऐलान किया है। इसके अलावा जर्मनी, पुर्तगाल और अल्बानिया में भी प्रदर्शन तेज हो सकते हैं।

एनवीडिया पर जेन्सन की इतना प्रभाव कि हटाना आसान नहीं,कंपनी में उनकी जगह लेने वाला कोई नहीं,चीनी महिला से अफेयर की जांच शुरू

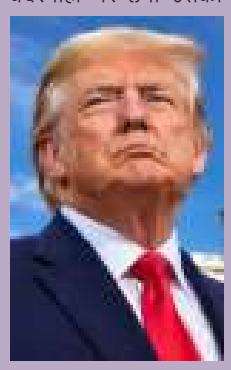
वॉशिंगटन डीसी। एनवीडिया के सीईओ जेन्सन हुआंग पर एक चीनी महिला से अफेयर को लेकर जांच शुरू हो गई है। अमेरिकी



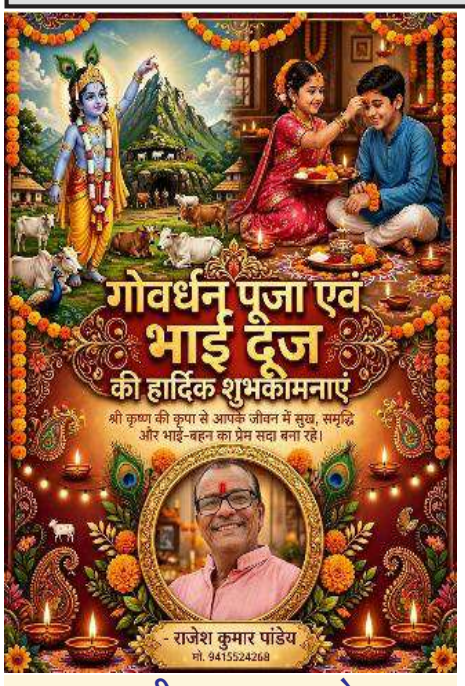
खुफिया एजेंसियों को शक है कि यह महिला चीन के लिए जासूसी कर रही थी। हुआंग ने पत्नी से बेवफाई की बात स्वीकार करते हुए माफी भी मांगी है। इस मामले में एनवीडिया के बोर्ड के सामने एक बड़ी चुनौती है। कंपनी के ज्यादातर बड़े फैसले हुआंग ही लेते हैं और 60 से ज्यादा अधिकारी सीधे उन्हें रिपोर्ट करते हैं। कंपनी में फिलहाल कोई ऐसा बड़ा अधिकारी नहीं है, जो उनकी जगह ले सके। ऐसे में अगर बोर्ड उन्हें हटाने का फैसला करता है, तो सबसे बड़ा सवाल होगा कि एनवीडिया की कमान किसे सौंपी जाए? जेन्सन हुआंग ने 1993 में एनवीडिया की स्थापना की थी। शुरुआती दौर में कंपनी वीडियो गेम के लिए ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट यानी जीपीयू चिप बनाती थी। इनका इस्तेमाल गेम में बेहतर ग्राफिक्स दिखाने के लिए होता था। 2006 में हुआंग ने एक बड़ा फैसला लिया। उन्होंने समझ लिया था कि भविष्य में इन चिप्स का इस्तेमाल एआई तकनीक विकसित करने में भी हो सकता है। इसके बाद उन्होंने एआई के लिए खास चिप और सॉफ्टवेयर बनाने में अरबों डॉलर लगा दिए। उनका यह दांव सही साबित हुआ। आज एआई से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट में एनवीडिया के चिप्स का इस्तेमाल होता है। कंपनी का इस बाजार में करीब 90फीसद हिस्सा है। एनवीडिया दुनिया की पहली सार्वजनिक रूप से कारोबार करने वाली कंपनी बनी, जिसका बाजार मूल्य 5 ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचा। एनवीडिया के चिप्स के लिए दुनिया की बड़ी टेक कंपनियां कितनी बेताब हैं, इसका अंदाजा एक डिनर की घटना से लगाया जा सकता है।2024 में एक रात ओरेकल के सह-संस्थापक लैरी एलिसन और टेस्ला-स्पेसएक्स के सीईओ इलॉन मस्क, एनवीडिया के सीईओ जेन्सन हुआंग के साथ डिनर कर रहे थे। इस दौरान दोनों ने हुआंग से ज्यादा चिप्स देने की गुजारिश की। एलिसन ने बाद में इस घटना को याद करते हुए बताया कि उन्होंने हुआंग से यहां तक कह दिया था, 'कृपया हमारा पैसा ले लीजिए। जितना ले रहे हैं, उससे ज्यादा लीजिए। हमें आपसे और चिप्स चाहिए।' यानी दुनिया के दो बड़े कारोबारी भी उस वक्त हुआंग के सामने ज्यादा चिप्स पाने के लिए गुहार लगा रहे थे। कंपनी की इसी कामयाबी ने हुआंग को टेक्नोलॉजी की दुनिया का चर्चित चेहरा बना दिया। एनवीडिया की डेवलपर कॉन्फ्रेंस में उन्हें सुनने के लिए लोग घंटों लाइन में खड़े रहते हैं। कई कार्यक्रमों में लोग उनसे ऑटोग्राफ लेने के लिए भीड़ लगा देते हैं। कंपनी के हर बड़े फैसले में हुआंग की चलती हैः-हुआंग के पास एनवीडिया की 3.56फीसदी हिस्सेदारी है। वे कंपनी के सबसे बड़े व्यक्तिगत शेयरधारक भी हैं। कंपनी में उनका दबदबा सिर्फ शेयरों तक सीमित नहीं है। वे रोजमर्रा के काम से लेकर बड़े कारोबारी फैसलों तक में सीधे शामिल रहते हैं। अमेरिकी सरकार की एआई और चिप नीतियों पर भी उनका असर रहा है। कंपनी पर उनकी इतनी मजबूत पकड़ की एक वजह उनका काम करने का तरीका भी है।आगे की खबर पेज संख्या 07 पर..

ट्रम्प बोले- ईरान से जंग लगभग खत्म,कतर के पीएम से मुलाकात के बाद कहा- फिलहाल हमले की जरूरत नहीं

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान के साथ युद्ध लगभग खत्म हो चुका है। उन्होंने सोमवार को कहा कि फिलहाल अमेरिका मौजूदा स्थिति बनाए रखेगा। किसी भी बदलाव की स्थिति में अमेरिकी सेना तैयार है। ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा, सैन्य तौर पर ईरान का मामला लगभग खत्म हो चुका है। ईरान की लीडरशिप खत्म कर दी गई है। हालांकि, अमेरिका अब भी यह सुनिश्चित करना चाहता है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम लंबे समय के लिए टल जाए। ट्रम्प ने यह बयान कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान बिन जासिम अल थानी से मुलाकात के बाद दिया। इस मुलाकात के बाद वे अचानक व्हाइट हाउस के ब्रीफिंग रूम पहुंचे और पत्रकारों से बात की। राष्ट्रपति ने ईरान पर दोबारा हमले की धमकी से पीछे हटने के संकेत भी दिए। उन्होंने रविवार को सीएनएन को फोन पर दिए इंटरव्यू में कहा था कि अगर ईरान के साथ बातचीत में प्रगति होती है और वह एक मजबूत समझौते पर हस्ताक्षर करता है, तो दोबारा हमले की जरूरत पड़ने की संभावना बहुत कम है। अमेरिकी सेना ने पिछले हफ्ते दो बार हमले किएः-इस बीच अमेरिकी सेना ने पिछले एक हफ्ते में कम से कम दो बार ईरान पर सीमित हमले किए हैं। इनमें ईरान की एयर डिफेंस प्रणाली को निशाना बनाया गया। इसके अलावा, शनिवार को अमेरिकी सेना ने एक कमर्शियल जहाज पर गोलीबारी कर उसे निष्क्रिय कर दिया। अमेरिका का दावा है कि यह जहाज ईरानी बंदरगाहों पर लगी उसकी



नौसैनिक नाकेबंदी को तोड़ने की कोशिश कर रहा था। युद्ध का असर अमेरिकी चुनावों पर भी पड़ाः-ट्रम्प ने ईरान के साथ आठ महीने से जारी युद्ध का जिक्र ऐसे समय किया है, जब पिछले हफ्ते हुए अमेरिकी मिडटर्म चुनावों में उनकी रिपब्लिकन पार्टी ने कांग्रेस के दोनों सदनों में बहुमत गंवा दिया। चुनावों के दौरान अमेरिकी मतदाताओं में युद्ध को लेकर नाराजगी भी एक मुद्दा रही। इस युद्ध के कारण ईंधन की कीमतों में तेजी आई, जिसका असर अमेरिका और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लगभग हर क्षेत्र पर पड़ा। ईरान बोला- अमेरिका जंग खत्म करे तो 2 दिन में होर्मुज खोल देंगेः- ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि अगर अमेरिका हर मोर्चे पर जंग खत्म करता है, तो ईरान दो दिन के अंदर होर्मुज स्ट्रेट खोल देगा। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि अमेरिका को पहले ईरान की शर्तें माननी होंगी। ऐसा नहीं हुआ तो ईरान जवाबी हमला करने के लिए तैयार है।अराघची ने कहा कि ईरान हर तरह की स्थिति का सामना करने के लिए तैयार है। उन्होंने दावा किया कि ईरान ने अपने हथियार मजबूत किए हैं, सेना की कमजोरियां दूर की हैं और नए हथियारों का परीक्षण किया है। उनके मुताबिक, ईरानी सेना पूरी तरह अलर्ट है। होर्मुज स्ट्रेट समुद्र का एक अहम रास्ता है। यहां से दुनिया के कई देशों तक कच्चा तेल और गैस पहुंचता है। अगर इस रास्ते से जहाजों की आवाजाही रुकती है, तो दुनियाभर में तेल की सप्लाई कम हो सकती है और कीमतें बढ़ सकती हैं। अमेरिका और इजराइल ने 28 फरवरी को परमाणु हथियार बनाने का आरोप लगाते हुए ईरान पर हमले शुरू किए थे। इसके बाद ईरान ने भी जवाबी हमले किए और दोनों के बीच जंग शुरू हो गई। अप्रैल की शुरुआत में दोनों पक्षों के बीच सीजफायर हुआ, लेकिन यह ज्यादा समय तक नहीं चला। जून में फिर से सीजफायर और जंग खत्म करने को लेकर समझौता हुआ, लेकिन अगस्त में यह भी टूट गया और तनाव फिर बढ़ गया।अब जंग रोकने को लेकर बातचीत चल रही है। इस बातचीत में परमाणु कार्यक्रम, होर्मुज स्ट्रेट खोलने और जंग खत्म करने जैसे मुद्दे शामिल हैं।



सरकारी धन का दुरूपयोग का आरोप,बेहद शर्मनाक मामला उजागर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) अमेठी। जनपद अमेठी के विकास क्षेत्र भादर अंतर्गत ग्राम पंचायत रतापुर में सरकारी धन की खुली लूट और संगठित भ्रष्टाचार का बेहद शर्मनाक मामला उजागर हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की 'भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस' नीति की खुलेआम धज्जियां उड़ाते हुए ग्राम प्रधान जितेन्द्र पाल, पंचायत सेक्रेटरी प्रवीण त्रिपाठी और कंसल्टेंट इंजीनियर गीता मौर्य के भ्रष्ट सिंडीकेट ने स्ट्रीट लाइट स्थापना के नाम पर लाखों रुपये का गबन कर बंदरबांट कर लिया है। धरातल पर बिना कोई नई स्ट्रीट लाइट लगाए, केवल पूर्व से स्थापित पुरानी लाइटों की पुरानी तस्वीरें पोर्टल पर अपलोड करके कागजी खानापूर्ति की गई और एक ही तिथि में दो अलग-अलग वाउचर तैयार कर सरकारी खजाने से कुल रु1,65,600 की अवैध निकासी कर ली गई:-1. वाउचर संख्या : 5ऊएइए/2026-27/P/16 । दिनांक : 18/07/2026 । निकासी धनराशि : रु82,800 (फर्मः माँ गायत्री इंटरप्राइजेज) 2. वाउचर संख्या : 5THSFC/2026-27/P/18. दिनांकः 18/07/2026। निकासी धनराशि : रु82,800 (फर्मः फर्मः माँ गायत्री इंटरप्राइजेज) एक ही दिन में, एक ही उद्देश्य (25 नग स्ट्रीट लाइट स्थापना) दिखाकर दो बार में रु82,800 और रु82,800 यानी कुल रु1,65,600 का भुगतान चहेती फर्म को ट्रांसफर कर दिया गया। विकासखंड भादर के बीडीओ और एडीओ पंचायत द्वारा इस पूरे सिंडीकेट को खुला संरक्षण दिया जा रहा है और जनता की गाढ़ी कमाई की खुली डकैती पर पर्दा डालने के लिए कागजी लीपापोती की जा रही है।

प्रदेश सरकार और जिला प्रशासन से मांग है कि इस संगठित लूट का तत्काल संज्ञान लेते हुए तीन सदस्यीय निष्पक्ष जिलास्तरीय तकनीकी अधिकारियों की संयुक्त टीम गठित कर मौके पर भौतिक सत्यापन कराया जाए। साथ ही ग्राम प्रधान, सेक्रेटरी, कंसल्टेंट इंजीनियर तथा संरक्षणदाता अधिकारियों के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में तत्काल प्राथमिक दर्ज कर गबन की गई पूरी धनराशि की रिकवरी कराई जाए।

चंदापुर मंदिर प्रांगण में अन्नकूट एवं गोवर्धन पूजा का हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। बाबा जगमोहनेश्वर धाम चंदापुर मंदिर में भगवान



जगन्नाथ जी के दरबार के सामने दिनांक 9 नवंबर 2026 दिन सोमवार कार्तिक मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि पर शाम 6:00 से गोवर्धन भगवान का पूजन अर्चन प्रारंभ हुआ आचार्य पंडित अभिषेक मिश्रा के द्वारा स्वस्ति वाचन का पाठ किया गया । ओंकार लोहिया के द्वारा गोवर्धन भगवान का भव्य स्वरूप तैयार किया गया। गाय के गोबर से गोवर्धन भगवान तैयार किए गए, इसके बाद दूध, दही ,घी ,शहद,शंकर एवं पंचामृत से स्नान कराया गया। भगवान विष्णु के 108 नाम के द्वारा अभिषेक किया गया। पूजन डॉक्टर विजय मिश्रा, महेश सिकरिया, मंटू शुक्ला, दिलीप श्रीवास्तव,जय श्री सिंह, ने किया। मुख्य व्यवस्था प्रभारी धर्मेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि बाजार में उपलब्ध सारी सब्जी, सारी मिठाईयां, सभी प्रकार के फलों को मिश्रण करके 56 भोग की सब्जी तैयार की गई। पूरी सब्जी एवं हलवा प्रसाद का वितरण किया गया। गोवर्धन जी की आरती एवं बाबा जगमोहनेश्वर की आरती संयुक्त रूप से संपन्न की गई। हजारों भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया । सभी भक्तों ने गोवर्धन भगवान की 11 बार परिक्रमा किया । पूरा मंदिर परिसर गोवर्धन भगवान की जय से गूंज रहा था । पूरे मंदिर परिसर में बिजली की भव्य सजावट करायी गई।

प्रांतीय आवाहन पर डिप्लोमा फार्मेसिस्ट एसोसिएशन रायबरेली का एकदिवसीय धरना प्रस्तावित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। डिप्लोमा फार्मासिस्ट संगठन, रायबरेली के जिला मंत्री दिवाकर सिंह ने बताया कि दिनांक 13 11.26 को फार्मासिस्ट एसोसिएशन उत्तर प्रदेश की 18 सूत्रीय मांगों के समर्थन में एक दिवसीय धरना का आयोजन मुख्य चिकित्साधिकारी रायबरेली के कार्यालय के समक्ष किया जा रहा है, जिसमें डिप्लोमा फार्मेसी की लंबित मांगों के शीघ्र निस्तारण के लिए एक ज्ञापन मुख्यमंत्री एवं महानिदेशक स्वास्थ्य को सौंपा जाएगा। डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष सुरेश चौधरी ने बताया कि आंदोलन के प्रथम चरण में मुख्य चिकित्सा अधिकारी रायबरेली के कार्यालय के समक्ष एक दिवसीय धरना देते हुए मुख्यमंत्री एवं महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं लखनऊ को ज्ञापन प्रेषित किया जाएगा, वही द्वितीय चरण में प्रदेश भर के सभी फार्मेसिस्ट 20 नवंबर को महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं लखनऊ के कार्यालय पर धरना दिया जाएगा। मांगे न माने जाने पर प्रदेशव्यापी आंदोलन चलाया जाएगा ।उन्होंने बताया कि फार्मासिस्ट संवर्ग की वित्तीय एवं गैर वित्तीय लंबित मांगों को शासन व महानिदेशक स्तर पर समाधान न होने पर समस्त चीफ फार्मासिस्ट एवं फार्मासिस्ट द्वारा यह आंदोलन किया जाएगा।

अवंतिका कॉलोनी में आग का खतरा बढ़ा रहीं इंटरनेट कंपनियों की लापरवाही, दीवारों और पेड़ों पर लटक रहे तार

वाई-फाई कनेक्शन के नाम पर मनमाने तरीके से बिछाई जा रही केबल, अग्निशमन विभाग और नगर निगम की कार्यप्रणाली पर उठे सवाल; कभी भी हो सकता है बड़ा हादसा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। नैनी की अवंतिका कॉलोनी में इंटरनेट और वाई-फाई कनेक्शन उपलब्ध कराने वाली स्थानीय ब्रॉडबैंड कंपनियों की कथित लापरवाही से कॉलोनी के निवासियों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। आरोप है कि कुछ स्थानीय इंटरनेट सेवा प्रदाता खर्च बचाने के चक्कर में अपनी केबलों को निर्धारित खंभों के बजाय मकानों की दीवारों और पेड़ों पर मनमाने तरीके से बांधकर लटका रहे हैं। घनी आबादी वाली इस आवासीय कॉलोनी में जगह-जगह फैले और लटकते बिजली एवं इंटरनेट के तार आग लगने अथवा किसी अन्य दुर्घटना की स्थिति में बड़ा खतरा बन सकते हैं। तारों के अव्यवस्थित जाल से शॉर्ट सर्किट, आग फैलने और आपातकालीन परिस्थितियों में राहत एवं बचाव कार्य प्रभावित होने की आशंका भी बनी हुई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि ब्रॉडबैंड कंपनियां अपने निजी व्यावसायिक लाभ और खर्च बचाने के लिए पूरी कॉलोनी की सुरक्षा को जोखिम में डाल रही हैं। सवाल यह भी है कि क्या इन कंपनियों ने नगर निगम और अग्निशमन विभाग से आवश्यक अनुमति प्राप्त की है? यदि अनुमति ली गई है तो तारों को इस तरह दीवारों और पेड़ों पर लटकाने की व्यवस्था किस आधार पर की गई है? निवासियों ने नगर निगम और अग्निशमन विभाग से मांग की है कि अवंतिका कॉलोनी का तत्काल सुरक्षा निरीक्षण कराया जाए। संबंधित ब्रॉडबैंड कंपनियों को नोटिस जारी कर निर्धारित मानकों के अनुरूप अपने खंभे लगाकर ही केबल बिछाने के निर्देश दिए जाएं। साथ ही बिना अनुमति और असुरक्षित तरीके से लगाई गई केबलों को हटवाया जाए। अब सवाल यह है कि क्या किसी बड़े हादसे के बाद ही संबंधित विभागों की नींद खुलेगी? प्रशासन को समय रहते कार्रवाई कर अवंतिका कॉलोनी के निवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।



(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। दिनांक-10.11.2026 को पुलिस उपायुक्त गंगानगर द्वारा पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई कर फरियादियों की शिकायतें सुनी गयीं तथा उनके समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कौशाम्बी में अधिकारियों के साथ की विकास कार्यों एवं जनकल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा

पात्र लाभार्थियों को योजनाओं से जोड़ने, महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने तथा ग्राम चौपाल के माध्यम से जनसमस्याओं के प्रभावी निस्तारण के दिए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। रविवार को उत्तर प्रदेश



के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कौशाम्बी स्थित मां शीतला अतिथि गृह, सयारा में जनपद के अधिकारियों के साथ बैठक कर विभिन्न विकासपरक एवं जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को शासन की प्राथमिकताओं के अनुरूप योजनाओं का प्रभावी एवं समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करने तथा प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री ने जनपद कौशाम्बी में टेक होम राशन (टीएचआर) प्लांट की स्थापना के लिए आवश्यक कार्यवाही प्राथमिकता के आधार पर पूरी करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित महिलाओं को राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा जाए, जिससे उन्हें स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हों और वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर एवं सशक्त बन सकें। केशव प्रसाद मौर्य ने ग्राम चौपालों का नियमित एवं सुव्यवस्थित आयोजन सुनिश्चित करने के निर्देश देते हुए कहा कि ग्राम चौपाल ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान का प्रभावी माध्यम बनें। अधिकारी गांवों में पहुंचकर लोगों की समस्याएं सुनें और उनका प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण सुनिश्चित करें। उन्होंने विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करने पर विशेष जोर दिया, ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति शासन की कल्याणकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे।

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मां शीतला अतिथि गृह, सयारा में पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी, भारत रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी, महाराजा बिजली पासी जी, महात्मा गौतम बुद्ध जी तथा महान चक्रवर्ती सम्राट अशोक जी की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष धर्मराज मौर्य, जिलाधिकारी डॉ. अमित पाल, पुलिस अधीक्षक श्री सत्य नारायण, मुख्य विकास अधिकारी विनोद राम त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

महापुरुषों एवं राष्ट्रनायकों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया नमन



नैनी के सरगम मोड़ पर कथित वसूली का मामला, बाइक गिराकर कार चालकों से रुपये मांगने का आरोप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। नैनी क्षेत्र के सरगम मोड़ पर कार चालकों को निशाना बनाकर कथित तौर पर रुपये वसूलने का मामला सामने आया है। आरोप है कि कुछ लोग सड़क पर कार के सामने अचानक अपनी बाइक गिरा देते हैं और फिर कार से टक्कर लगने का माहौल बनाकर चालक पर समझौते के नाम पर रुपये देने का दबाव बनाते हैं। बताया जा रहा है कि इस तरह की कथित गतिविधियों से वाहन चालकों में भय और असमंजस की स्थिति पैदा हो रही है। हालांकि, मामले की आधिकारिक पुष्टि और आरोपों की स्वतंत्र जांच होना अभी बाकी है। इस संबंध में वाहन चालकों से अपील की गई है कि ऐसी किसी भी परिस्थिति में घबराने के बजाय घटनास्थल की फोटो और वीडियो बनाएं। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की जानकारी जुटाएं और तत्काल पुलिस को सूचना दें। बिना जांच और पुलिस की जानकारी के किसी को नकद भुगतान न करें। वहीं, पुलिस प्रशासन से सरगम मोड़ और एडीए मोड़ क्षेत्र के सीसीटीवी फुटेज की जांच कराने तथा मामले की निष्पक्ष पड़ताल करने की मांग की गई है,

ताकि यदि कोई संगठित तरीके से इस तरह की गतिविधियों में शामिल है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जा सके।

वाहन चालकों से अपील है कि सड़क पर सतर्क रहें, किसी भी विवाद की स्थिति में कानून का सहारा लें और संदिग्ध गतिविधियों की सूचना पुलिस को दें।

भदोही पुलिस ने बिहार से लापता युवक को सकुशल परिजनों से मिलाया, परिवार ने जताया आभार

ऊँज पुलिस की तत्परता से मिला 5 नवंबर से लापता 21 वर्षीय धीरज कुमार, परिजनों को सौंपी गई सुपुर्दगी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) भदोही। जनपद भदोही के थाना ऊँज पुलिस मौके पर पहुंची और युवक से पूछताछ करते हुए मानसिक स्थिति भी ठीक नहीं है। सूचना मिलने पर धीरज की



ऊँज पुलिस ने मानवीय संवेदनशीलता और तत्परता का परिचय देते हुए बिहार से लापता एक 21 वर्षीय युवक को सकुशल उसके परिजनों से मिला दिया। जानकारी के अनुसार, 10 नवंबर 2026 को सुबह करीब चार बजे वाहिदा मोड़ थाना क्षेत्र ऊँज में स्थानीय लोगों को एक युवक घूमता हुआ दिखाई दिया। युवक की मानसिक स्थिति ठीक नहीं लगने पर स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही उसकी पहचान एवं परिजनों का पता लगाने का प्रयास शुरू किया। पुलिस के अथक प्रयास से युवक की पहचान धीरज कुमार पुत्र रमाशंकर राम, निवासी ग्राम नरायना, थाना चेनारी, जनपद सासाराम (बिहार) के रूप में हुई। पुलिस ने उचित माध्यम से उसके परिजनों से संपर्क किया। परिजनों ने बताया कि धीरज कुमार 5 नवंबर 2026 को घर से लापता हो गया था और उसकी माता उषा देवी, चाचा हरिहर राम तथा परिजन जगनारायण राम थाना ऊँज पहुंचे और युवक की पहचान की। इसके बाद पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई पूरी कर धीरज कुमार को उसकी माता एवं अन्य परिजनों की सुपुर्दगी में सकुशल सौंप दिया। भदोही पुलिस की इस मानवीय पहल और तत्परता से परिवार को अपना बिछड़ा सदस्य वापस मिल गया। परिजनों ने पुलिस के प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त किया।



(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। पुलिस उपायुक्त नगर द्वारा आज दिनांक-10.11.2026 को पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई कर फरियादियों की शिकायतें सुनी गयीं तथा उनके समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

अम्बेडकर कल्याण समिति के तत्वावधान में चल रहा बौद्धाचार्य प्रशिक्षण शिविर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) गौरीगंज/अमेठी। अम्बेडकर कल्याण समिति के तत्वावधान में इस समय गंगापुर भीमी चल रहे बौद्धाचार्य प्रशिक्षण में प्रशिक्षुओं ने 14 बौद्ध संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।प्रशिक्षक रामसमुझ बौद्धाचार्य ने कहा कि गंगापुर भीमी में चल रहे बौद्धाचार्य प्रशिक्षण के तीसरे दिवस में प्रशिक्षुओं ने 14 संस्कार में विभिन्न संस्कार पर अपनी समझ विकसित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण प्राप्त कर नव प्रशिक्षु फील्ड में जाकर व्यावहारिक रूप से अपनी कार्यचर्या में शामिल कर संस्कारों पर पकड़ बनाएंगे। अम्बेडकर कल्याण समिति जनपद अमेठी के बैनर तले चल रहे इस प्रशिक्षण में समिति के जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार बौद्ध मीडिया प्रभारी सुरेन्द्र अम्बेडकर, वरिष्ठ शिक्षक इन्द्र पाल, प्रचार मंत्री राम बली गौतम, सामाजिक कार्यकर्ता रामफल फ़ौजी, विक्रम बौद्ध,वरिष्ठ समाजसेवी राम अभिलाष बौद्ध सहित कई पदाधिकारी व अन्य समाज सेवी व प्रशिक्षु गण उपस्थित रहे।



कर्ज बढ़ा तो दुकानदार ने पत्नी को मार डाला-शाहजहांपुर में 11 साल की बेटी का भी गला दबाया

शाहजहांपुर। शाहजहांपुर में दुकानदार पति ने पत्नी की गला दबाकर हत्या कर दी। 11 साल की बेटी को भी गला दबाकर मारने की कोशिश की। पिता की हैवानियत देखकर 16 साल की दूसरी बेटी डर गई। उसने खुद को कमरे में बंद कर जान बचाई। इसके बाद कमरे से अपने चाचा को कॉल कर पूरी बात बताई। चाचा की सूचना पर पहुंची पुलिस मां-बेटी को मेडिकल कॉलेज ले गई। वहां पत्नी की मौत हो गई, जबकि छोटी बेटी की हालत गंभीर है। वह आईसीयू में भर्ती है। वहीं, यह सब करने के बाद भी पिता भागा नहीं, घर में ही बैठा रहा। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को पिता ने बताया कि उसकी दुकान नहीं चलती थी। इसलिए वह पूरे परिवार को मारकर खुद भी सुसाइड करने वाला था। घटना जिला मुख्यालय से 10 किमी दूर रोजा थाना क्षेत्र की सोमवार रात 1 बजे की है।

विधानसभा मतदाता सूची के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण-2027 की समय-सारिणी संशोधित,अब 17 नवम्बर को होगा मतदाता सूची का आलेख्य प्रकाशन

दावे एवं आपत्तियां 17 नवम्बर से 16 दिसम्बर तक होंगी प्राप्त,मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 04 जनवरी, 2027 को होगा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी श्री नवदीप रिणवा ने बताया कि भारत



निर्वाचन आयोग द्वारा अर्हता तिथि 01 जनवरी, 2027 के आधार पर प्रदेश के सभी 403 विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूचियों के विशेष



संक्षिप्त पुनरीक्षण-2027 की समय-सारिणी में संशोधन किया गया है। आयोग द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार अब आलेख्य मतदाता सूची का प्रकाशन 17 नवम्बर, 2026 को किया जाएगा। उन्होंने बताया कि संशोधित कार्यक्रम के अनुसार मतदाता सूची में नाम शामिल कराने, हटवाने अथवा किसी प्रविष्टि में संशोधन के लिए दावे एवं आपत्तियां प्राप्त करने की अवधि 17 नवम्बर से 16 दिसम्बर, 2026 तक निर्धारित की गई है। प्राप्त दावे एवं आपत्तियों का निस्तारण 28 दिसम्बर, 2026 तक किया जाएगा। मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 04 जनवरी, 2027 को होगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देशित किया है कि संशोधित समय-सारिणी का समाचार पत्रों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करें। साथ ही सभी मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय एवं राज्यीय राजनीतिक दलों को भी संशोधित कार्यक्रम से अवगत कराएं। उन्होंने सभी निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों एवं सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों को संशोधित कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित कार्यवाही समयबद्ध एवं प्रभावी ढंग से संपन्न कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने प्रदेश के पात्र नागरिकों से अनुरोध किया है कि वे पुनरीक्षण अवधि के दौरान अपनी एवं अपने परिवार के सदस्यों की मतदाता सूची में प्रविष्टियों की जांच अवश्य कर लें तथा पात्र नागरिकों का नाम मतदाता सूची में शामिल कराने के लिए निर्धारित अवधि में आवश्यक आवेदन करें, ताकि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची में नाम दर्ज होने से वंचित न रहे।

प्रयागराज बेसिक शिक्षा निदेशक पर एफआईआर,पीएनपी कर्मचारी बोला- लीव पर रहने के दौरान सर्विस बुक में बैकडेट से एंट्री की गई

प्रयागराज। शहर में में बेसिक शिक्षा निदेशक अनिल भूषण चतुर्वेदी समेत 2 लोगों पर एफआईआर दर्ज हुई है। आरोप



है कि उनके परीक्षा नियामक प्राधिकारी कार्यालय में सचिव के पद पर तैनात रहने के दौरान एक कर्मचारी की सर्विस बुक में जालसाजी की गई। कर्मचारी के मेडिकल लीव पर रहने के दौरान उनकी सर्विस बुक में बैक डेट से एंट्री कर दी गई। इतना ही नहीं, जिस डेट में यह एंट्री दिखाई गई, उस समय कर्मचारी के खिलाफ कोई विभागीय कार्रवाई भी नहीं चल रही थी। मामले में कोर्ट के आदेश पर 8 नवंबर को कर्नलगंज थाने में मुकदमा दर्ज की गई है। दूसरा आरोपी पीएनपी कर्मचारीः-शिकायतकर्ता शशि कुमार यादव वर्ष 1995 से 2022 तक परीक्षा नियामक प्राधिकारी कार्यालय में कार्यरत रहे। उन्होंने तत्कालीन सचिव अनिल भूषण चतुर्वेदी और वरिष्ठ सहायक इष्टदेव उपाध्याय पर सर्विस बुक में हेरफेर करने का आरोप लगाया है। घटना के समय अनिल भूषण चतुर्वेदी परीक्षा नियामक प्राधिकारी के सचिव थे। शशि कुमार के मुताबिक, वह एक मार्च से 31 मार्च 2021 तक मेडिकल लीव पर थे। उनका अवकाश सक्षम अधिकारी ने 27 जुलाई 2021 को वेतन सहित मंजूर किया था। आरोप है कि इसी दौरान उनकी सर्विस बुक में 31 मार्च 2021 की तारीख से प्रतिकूल एंट्री कर दी गई। शिकायत में कहा गया है कि 24 जून 2021 को तत्कालीन प्रबंध सहायक से उनकी मूल सर्विस बुक और व्यक्तिगत फाइल लेकर वरिष्ठ सहायक इष्टदेव उपाध्याय ने अपने पास रख ली थी। जबकि कार्यालय आदेश के मुताबिक, उस समय इष्टदेव उपाध्याय केवल क्रय-विक्रय अनुभाग के प्रभारी थे। उनका प्रबंध अनुभाग से कोई संबंध नहीं था। शशि कुमार का दावा है कि 24 जून को जब उनकी सर्विस बुक मंगाई गई थी, तब उसमें कोई प्रतिकूल एंट्री नहीं थी। जुलाई में जब सर्विस बुक और फाइल वापस प्रबंध अनुभाग पहुंची तो उसमें 31 मार्च की तारीख से प्रतिकूल एंट्री दर्ज मिली। उनका आरोप है कि 24 जून से जुलाई के बीच यह हेरफेर किया गया। 22 जून की कॉपी में नहीं थी कोई प्रतिकूल एंट्रीः-शिकायतकर्ता ने अपने आरोपों के समर्थन में 22 जून 2021 को प्रमाणित सर्विस बुक की कॉपी भी पेश की है। उनका कहना है कि कुलसचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी ने मूल सर्विस बुक से मिलान करने के बाद यह कॉपी प्रमाणित की थी। इसमें 22 जून तक कोई प्रतिकूल एंट्री नहीं थी। इसके अलावा तत्कालीन प्रबंध सहायक अरविंद कुमार साहू के 30 मई 2022 के शपथपत्र का भी हवाला दिया गया है। इसमें बताया गया है कि सचिव के मौखिक आदेश पर इष्टदेव उपाध्याय ने 24 जून 2021 को शशि कुमार की सर्विस बुक और व्यक्तिगत फाइल ली थी।शशि कुमार के मुताबिक, आरटीआई से मिली जानकारी में सामने आया कि प्रतिकूल एंट्री से संबंधित आदेश नौ जुलाई 2021 को भेजा गया था, जबकि उस पर 31 मार्च 2021 की तारीख लिखी थी। रिसीव और डिस्पैच अनुभाग ने भी 31 मई 2022 को बताया था कि उनके रजिस्टर में इस आदेश का कोई डिस्पैच नंबर दर्ज नहीं है। तबादले के बाद भी सचिव की भूमिका पर सवालः-शिकायत में तत्कालीन सचिव अनिल भूषण चतुर्वेदी की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं। शशि कुमार के मुताबिक, 15 जून 2021 को शासनादेश के जरिए अनिल भूषण चतुर्वेदी का तबादला हो गया था, लेकिन उन्होंने 29 जून को अपना कार्यभार सौंपा। इसी बीच 24 जून को उनकी सर्विस बुक मंगाई गई थी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि इसी दौरान पुरानी तारीख डालकर प्रतिकूल एंट्री की गई। उन्होंने यह भी दावा किया है कि कार्यालय के कई कर्मचारियों ने लिखित बयान देकर उनके साथ उत्पीड़न और सर्विस बुक में हेरफेर किए जाने की बात कही है। थाने से पुलिस आयुक्त तक लगाई गुहार, नहीं हुई एफआईआरः-शशि कुमार ने 22 सितंबर 2025 को कर्नलगंज थाने में एफआईआर दर्ज करने के लिए शिकायत दी थी। इसके बाद 29 सितंबर को पुलिस आयुक्त को भी प्रार्थना पत्र भेजा। पुलिस आयुक्त ने मामले की जांच एसीपी द्वितीय, सिविल लाइंस को सौंपी थी, लेकिन एफआईआर दर्ज नहीं हुई।

इसके बाद शशि कुमार ने कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया। इसमें पुलिस को मुकदमा दर्ज कर जांच करने का आदेश देने की मांग की गई थी। अब न्यायालय के आदेश पर कर्नलगंज थाने में तत्कालीन सचिव अनिल भूषण चतुर्वेदी और वरिष्ठ सहायक इष्टदेव उपाध्याय के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। कर्नलगंज थाना प्रभारी ज्ञानेश्वर मिश्रा ने बताया- 'कोर्ट के आदेश पर एफआईआर दर्ज हुई है। मामले से जुड़े दस्तावेजों और कर्मचारियों के बयान के आधार पर जांच की जाएगी।'



(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मथुरा। फर्जी ईडी अधिकारी गिरफ्तार। यूपी के मथुरा से खुद को ईडी अधिकारी बताने वाला सचिन शर्मा गिरफ्तार किया गया है, सचिन प्राइवेट कार पर नीली बत्ती लगा कर चलता था।

प्रयागराज में थाने के अंदर वकीलों का अनोखा प्रदर्शन,मच्छरदानी लगाकर सोए,लोन-एजेंट की गिरफ्तारी के लिए 4 दिन से प्रदर्शन

प्रयागराज। शहर के सिविल लाइंस थाने में 8 वकील चार दिन से धरने पर बैठे हैं। वे गाड़ी का



लोन बंद कराने के नाम पर 63 हजार रुपए की धोखाधड़ी करने वाले एजेंट की गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। उनके विरोध का अंदाज अनोखा है। कभी 'नाकाबंदी' गाने पर डांस करते हैं तो कभी 'हम पागल नहीं हैं भैया, हमारा दिमाग खराब है' की धुन पर झूमते हैं। माइक से गजल और शायरी भी सुना रहे हैं। शायरी से पहले कहते हैं- 'थाना प्रभारी जी, ये आपके लिए है।' वकीलों ने थाने के बाहर दरी, गद्दे, चादर और मच्छरदानी बिछाकर डेरा जमा रखा है। वे गाड़ी-मेज, माइक और लाउडस्पीकर भी लगा लिए हैं।

दिवाली पर भी घर नहीं गए। वकील बृजेश तिवारी ने बताया- मैंने अपनी हीरो स्प्लेंडर बाइक (यूपी-70 जेए-3763) का लोन बंद कराने के लिए कान्हा मोटर्स के कर्मचारी अभय पांडेय से संपर्क किया था। कर्मचारी ने लोन की बकाया रकम 63,400 रुपए बताई। भुगतान के समय सर्वर की समस्या बताकर उसने अपने बैंक खाते में रुपए जमा करा लिए और फर्जी रसीद दे दी। कई दिन बाद भी जब लोन खाता बंद नहीं हुआ तो उन्होंने हीरो एजेंसी में संपर्क किया। वहां पता चला कि उनके खाते में कोई रकम जमा नहीं हुई है। एजेंसी ने कोई रसीद भी जारी नहीं की थी। 1 अक्टूबर 2026 को पुलिस कमिश्नर को प्रार्थना पत्र देकर आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने और कानूनी कार्रवाई की मांग की थी। इसके बाद सिविल लाइंस थाने में एफआईआर दर्ज कराई। मुकदमा दर्ज होने के बावजूद पुलिस ने आरोपी पर कार्रवाई नहीं की। एजेंट की गिरफ्तारी न होने से नाराज बृजेश तिवारी 7 नवंबर को साथी वकीलों के साथ दरी-बिस्तर लेकर थाने पहुंचे और धरने पर बैठ गए। बाद में कुर्सी-मेज, माइक और लाउडस्पीकर भी मंगा लिए। पुलिस ने कई बार वकीलों को समझाकर धरना खत्म कराने की कोशिश की, लेकिन वे अपनी मांग पर अड़े हैं। उनका कहना है कि एजेंट की गिरफ्तारी के बाद ही धरना खत्म होगा। इंस्पेक्टर राम आसरे यादव ने बताया-'3 नवंबर को वकील बृजेश कुमार तिवारी ने बाइक लोन में धोखाधड़ी के मामले में एफआईआर दर्ज कराई थी। इसी मामले में आरोपी की गिरफ्तारी और 63 हजार रुपए की रिकवरी की मांग को लेकर वकील थाने में प्रदर्शन कर रहे हैं।' उन्हें समझाने का प्रयास किया जा रहा है।

अयोध्या को 'सनातन तीर्थाटन की वैश्विक राजधानी' बनाएंगे,मंदिर में चोरी विवाद से श्रद्धालु घटे, कारोबार पर भी असरः-अखिलेश यादव

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अयोध्या को लेकर भाजपा सरकार पर बड़ा हमला



बोला है। उन्होंने कहा कि राम मंदिर में चोरी के विवाद से आहत होकर अयोध्या आने वाले आस्थावान और श्रद्धालुओं की संख्या दिन-प्रतिदिन कम होती जा रही है। इसका सीधा असर अयोध्या की स्थानीय अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। सपा सरकार बनने पर अयोध्या के मान-सम्मान की पुनर्स्थापना के साथ मंदिरों की व्यवस्था में पारदर्शिता लाई जाएगी। अयोध्या को विश्वस्तरीय सुविधाओं से जोड़कर 'सनातन तीर्थाटन की वैश्विक राजधानी' बनाया जाएगा। अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया पर एक विस्तृत पोस्ट के जरिए अयोध्या के लिए अपनी पार्टी का विजन सामने रखा। इसमें उन्होंने मंदिरों की व्यवस्था, पर्यटन, स्थानीय कारोबार, नाविकों के रोजगार, गरीबों के राशन और जमीन से जुड़े कथित घोटालों जैसे मुद्दों को शामिल किया। उनका कहना है कि अयोध्या की धार्मिक पहचान और स्थानीय लोगों के हितों को प्राथमिकता दी जाएगी। राम मंदिर की व्यवस्था होगी पारदर्शीः-अखिलेश ने राम मंदिर में चोरी के विवाद का जिक्र करते हुए कहा कि इससे आस्थावान लोगों को ठेस पहुंची है। श्रद्धालुओं की घटती संख्या का असर स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि सपा सरकार अयोध्या के मंदिरों को पारदर्शी व्यवस्था देगी, जिससे लोगों का विश्वास दोबारा कायम हो सके। उन्होंने अयोध्या में वर्ल्ड क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने की बात कही। उनके मुताबिक, शहर में ऐसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी, जिससे देश-दुनिया से आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर अनुभव मिले और अयोध्या धार्मिक पर्यटन के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित हो। नाविकों को रोजगार व निषादराज के रिश्ते को फिर स्थापित करने का वादाः-अखिलेश ने अयोध्या में पारंपरिक नौकायन को बढ़ावा देने का भी वादा किया। उन्होंने कहा कि इससे परंपरागत नाविकों को रोजगार मिलेगा और भगवान राम तथा निषादराज के प्रगाढ़ संबंध को फिर से स्थापित करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने भाजपा पर इस ऐतिहासिक और सामाजिक संबंध को कमजोर करने का आरोप लगाया। अखिलेश ने कहा कि भाजपा का प्रभुत्ववाद नहीं चाहता कि भगवान राम और पीडीए समाज के बीच गले मिलने का वह दृश्य लोगों को याद रहे। बाहरी ठेकेदारों से अयोध्या को मुक्त कराएंगेः-सपा अध्यक्ष ने अयोध्या में जमीनों की खरीद-फरोख्त और निर्माण कार्यों में बाहरी लोगों की भूमिका पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि अयोध्या को बाहरी ठेकेदारों से मुक्त कराया जाएगा और जमीनों की जांच कराई जाएगी। अखिलेश ने सर्किल रेट से जुड़े कथित महाघोटाले का जिक्र करते हुए कहा कि इसमें शामिल भाजपा नेताओं और भ्रष्ट अधिकारियों को बख्शा नहीं जाएगा। अयोध्या की लूट से भरे उनके खजाने खंगाले जाएंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि बाहरी लोगों ने अयोध्या को लूटा है और स्थानीय लोगों के हितों की अनदेखी की गई है। राशन में तेल-घी और गरीब महिलाओं को आर्थिक मदद का वादाः-अखिलेश यादव ने गरीबों के राशन और पोषण को भी अपने अयोध्या विजन का हिस्सा बनाया। उन्होंने कहा कि सपा सरकार बनने पर राशन में तेल और घी दिया जाएगा, ताकि गरीब परिवारों की पौष्टिक जरूरतें पूरी हो सकें। उन्होंने ऐसी अयोध्या बनाने की बात कही, जहां किसी गरीब महिला या बच्चे को अपमानित और प्रताड़ित न किया जाए। पोस्ट में उन्होंने तेल बटोर रही गरीब महिला और बच्चों के साथ कथित दुर्व्यवहार का जिक्र करते हुए भाजपा सरकार पर निशाना साधा। एआई वीडियो से समझाया पीडीए सरकार का राशन मॉडलः-अखिलेश यादव ने पोस्ट के साथ एक एआई जनरेटेड वीडियो भी साझा किया है। वीडियो में दीयों से तेल इकट्ठा कर रहा एक बच्चा दिखाई देता है। एक महिला उससे पूछती है कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। बच्चा बताता है कि उसके पिता नहीं हैं और वह घर के राशन के लिए तेल इकट्ठा कर रहा है। इस पर महिला उसे भरोसा दिलाती है कि चिंता करने की जरूरत नहीं है। कुछ दिन बाद पीडीए सरकार आएगी और घर के राशन के साथ सरसों का तेल भी मुफ्त मिलेगा। वीडियो में महिला यह भी कहती है कि उसकी मां को सालाना 40 हजार रुपये दिए जाएंगे। इस वीडियो के जरिए अखिलेश ने गरीब परिवारों, खासकर महिलाओं और बच्चों को केंद्र में रखकर अपनी सरकार की प्रस्तावित कल्याणकारी योजनाओं का संदेश देने की कोशिश की है। राशन में तेल-घी देने के वादे को उन्होंने सीधे गरीब परिवारों की पोषण संबंधी जरूरतों से जोड़ा है। धार्मिक भावनाएं आहत करने वालों पर होगी कार्रवाईः-अखिलेश ने अपने पोस्ट में धार्मिक सौहार्द और धर्मस्थलों से जुड़े विवादों पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था बनाई जाएगी, जिसमें कोई भी व्यक्ति भगवान राम, भगवान कृष्ण या किसी अन्य धर्म के आराध्यों और महापुरुषों का अपमान करके स्वतंत्र न घूम सके। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों के खिलाफ वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, धार्मिक भावनाएं आहत करने वाले लोगों को संरक्षण देने वालों को भी सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने की साजिश में संलिप्त पाए जाने पर दंडित किया जाएगा। अयोध्या के जरिए भाजपा को घेरने की रणनीतिः-अखिलेश यादव की इस पोस्ट में अयोध्या को लेकर धार्मिक आस्था, स्थानीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, भ्रष्टाचार और सामाजिक न्याय के मुद्दों को एक साथ रखा गया है। खास बात यह है कि उन्होंने राम मंदिर को लेकर उठे चोरी के विवाद को स्थानीय कारोबार और श्रद्धालुओं की संख्या से जोड़कर भाजपा को घेरने की कोशिश की है। कुल मिलाकर, अखिलेश यादव ने अयोध्या को केवल धार्मिक पर्यटन स्थल के तौर पर नहीं, बल्कि स्थानीय रोजगार, पारदर्शी मंदिर व्यवस्था, गरीबों के कल्याण और सामाजिक सम्मान से जुड़े राजनीतिक एजेंडे के रूप में पेश किया है।



राशिद अल्वी बोले- राम मंदिर किसी सीएम की जागीर नहीं, 'अखिलेश 6 दिसंबर बाबरी विध्वंस पर अयोध्या जाएं'-पंकज चौधरी

लखनऊ/अयोध्या। यूपी भाजपा अध्यक्ष पंकज चौधरी ने अखिलेश यादव को 12 दिसंबर की बजाय 6 दिसंबर को अयोध्या



जाने की सलाह दी है। कहा कि अखिलेश के राम मंदिर जाने से पुराने पाप नहीं धुलेंगे। उन्होंने कहा- रामभक्ति की नौटंकी कर अखिलेश अपने पुराने कारनामे छिपा नहीं सकते। उन्हें सच्चा पश्चाताप करना चाहिए और सपा सरकार में हुई रामभक्तों की हत्या के लिए माफी मांगनी चाहिए। दरअसल, 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में कारसेवकों ने बाबरी ढांचे को ढहा दिया था। भाजपा इस दिन को शौर्य दिवस के रूप में मनाती है। उधर, दिवाली को लेकर कांग्रेस सांसद इमरान मसूद का विवादित बयान सामने आया है। उन्होंने कहा- दिवाली या प्रदूषण, सब मानवजनित रोग है। लोगों को जागरूक होना पड़ेगा। सरकार इन मुद्दों पर ज्यादा कुछ नहीं करेगी।कांग्रेस के पूर्व सांसद राशिद अल्वी ने कहा- राम मंदिर किसी पार्टी या मुख्यमंत्री की जागीर नहीं है। राहुल गांधी और अखिलेश यादव समेत कोई भी अपनी आस्था के अनुसार वहां जा सकता है। आजम खान पर ईडी कार्रवाई पर राशिद अल्वी ने कहा- उनके साथ ज्यादती हो रही है। भाजपा सरकार उनके साथ वैसा ही व्यवहार कर रही है, जैसा पाकिस्तान में इमरान खान के साथ किया जा रहा है। कांग्रेस के पूर्व सांसद राशिद अल्वी मंगलवार को संभल पहुंचे। उन्होंने आरोप लगाया कि ओवैसी भाजपा के इशारे पर काम करते हैं और उसे ताकत देते हैं। उन्होंने कहा कि ओवैसी जहां जाते हैं, वहां भाजपा उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करती। राम मंदिर पर अल्वी ने कहा कि यह किसी पार्टी या मुख्यमंत्री की जागीर नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। राहुल गांधी और अखिलेश यादव समेत कोई भी अपनी आस्था के अनुसार वहां जा सकता है। राम मंदिर



से चांदी चोरी के मामले में उन्होंने योगी सरकार से आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की। साथ ही कहा कि आजम खान के साथ ज्यादती हो रही है और भाजपा सरकार उनके साथ वैसा ही व्यवहार कर रही है, जैसा पाकिस्तान में इमरान खान के साथ किया जा रहा है। चुनाव आयोग का बड़ा फैसलाः दोबारा तैनात रिटायर्ड अफसर भी नहीं कर सकेंगे राजनीतिक प्रचार- यूपी विधानसभा चुनाव से पहले चुनाव आयोग ने सरकारी विभागों में दोबारा तैनात रिटायर्ड अधिकारियों और कर्मचारियों को लेकर निर्देश जारी किए हैं। अब कॉन्ट्रैक्ट या सलाहकार के तौर पर काम कर रहे रिटायर्ड कर्मचारियों पर भी आचार संहिता के नियम लागू होंगे। वे किसी राजनीतिक दल या उम्मीदवार का प्रचार और समर्थन नहीं कर सकेंगे। आयोग ने मुख्य सचिव और मुख्य निर्वाचन अधिकारी को पत्र भेजकर निर्देशों का सख्ती से पालन कराने को कहा है।1- सरकारी पद का इस्तेमाल कर प्रचार नहीं कर सकेंगेः- आयोग के मुताबिक, सरकारी पैसे से चलने वाले किसी भी संगठन, समिति, निगम या आयोग में काम करने वाले कर्मचारी चुनाव प्रचार या राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले सकेंगे। वे अपने पद और अधिकार का इस्तेमाल किसी पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष में नहीं कर सकेंगे। 2- चुनाव अधिकारियों के साथ बैठक पर भी रोकः- रिटायरमेंट के बाद सलाहकार या दूसरे पदों पर दोबारा तैनात अधिकारियों पर भी नियमित सरकारी कर्मचारियों जैसे नियम लागू होंगे। ऐसे अधिकारी चुनाव वाले जिलों या विधानसभा क्षेत्रों के निर्वाचन अधिकारियों को सरकारी चर्चा या वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए नहीं बुला सकेंगे।

उनके साथ बैठक भी नहीं कर सकेंगे। आयोग ने चेतावनी दी है कि इन निर्देशों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ गंभीरता से कार्रवाई की जाएगी। अखिलेश यादव ने 'एक्स' पर लिखा- यूपी के मुख्यमंत्री जी का 80-20 से मतलब ये है कि उनका भाजपा गठबंधन अधिकतम 80 सीट पर ही लड़ने लायक होगा और पीडीए गठबंधन, एनडीए के मुकाबले 20 (बीस) साबित होगा।

डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन वेलफेयर ट्रस्ट सोनभद्र का प्रमाण पत्र वितरण समारोह सम्पन्न,डीबीए सचिवालय में हुआ आयोजन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। शनिवार को डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन वेलफेयर ट्रस्ट सोनभद्र का प्रमाण पत्र वितरण समारोह शनिवार को डीबीए सचिवालय, सोनभद्र में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता जगजीवन सिंह एडवोकेट ने की तथा कार्यक्रम का कुशल संचालन डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन सोनभद्र के पूर्व महामंत्री प्रदीप कुमार मौर्य एडवोकेट ने किया।



ट्रस्ट के संचालक मंडल के अध्यक्ष श्याम बिहारी यादव एडवोकेट ने कहा कि डिस्ट्रिक्ट बार एसोसिएशन वेलफेयर ट्रस्ट सोनभद्र का उद्देश्य अधिवक्ता साथियों के हितों की रक्षा करना, उनके कल्याण के लिए सार्थक प्रयास करना तथा जरूरतमंद अधिवक्ताओं को सहयोग एवं सहायता उपलब्ध कराना है। ट्रस्ट को मजबूत बनाने के लिए सभी सदस्यों की सक्रिय सहभागिता, आपसी एकजुटता और समर्पण आवश्यक है। उन्होंने कहा कि प्रमाण पत्र वितरण केवल सदस्यता का औपचारिक दस्तावेज नहीं, बल्कि ट्रस्ट के प्रति सदस्यों की जिम्मेदारी और विश्वास का प्रतीक भी है। सभी सदस्यों से ट्रस्ट के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने तथा संगठन को मजबूत बनाने में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। इस अवसर पर पवन कुमार सिंह, राजेश कुमार यादव, रमेश चंद्र सिंह,सुरेश कुशवाहा, प्रेम प्रताप विश्वकर्मा, वीरेंद्र कुमार राव, संतोष यादव, पंकज कुमार यादव, रविशंकर एडवोकेट, राजेंद्र कुमार यादव, चतुर्भुज शर्मा आदि अधिवक्ता उपस्थित रहे।

पेड़ से लटकता हुआ मिला महिला का शव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। रॉबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के सुकृत पुलिस चौकी अंतर्गत कटलहिया स्थित पाल दरी के पास सोमवार को एक महिला का शव पेड़ से लटका मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार, सोमवार 9 नवंबर 2026 को दोपहर करीब 2:35 बजे पुलिस को सूचना मिली कि पाल दरी स्थित अरविंद बाबा आश्रम कटलहिया के पास एक महिला का शव पेड़ से लटका हुआ है। सूचना पर रॉबर्ट्सगंज कोतवाली पुलिस, सुकृत चौकी प्रभारी विष्णु प्रभा सिंह, उपनिरीक्षक रामासरे यादव सहित पुलिस टीम मौके पर पहुंची। मृतका की पहचान बबिता वैगा (35 वर्ष) पत्नी बलिराम, निवासी कटलहिया, थाना रॉबर्ट्सगंज, जनपद सोनभद्र के रूप में हुई। बताया गया कि वह पिछले करीब डेढ़ वर्ष से अपने मायके में रह रही थी। मृतका के दो छोटे बच्चे हैं, जिनमें पांच वर्षीय पुत्री हिमांशी और करीब डेढ़ वर्षीय पुत्र गौरव शामिल हैं। उसके पति बलिराम वर्तमान में दिल्ली में रहते हैं। परिजनों के अनुसार, बबिता की मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती थी और उसे कभी-कभी दौरे भी पड़ते थे। हालांकि, घटना के वास्तविक कारणों की पुष्टि अभी नहीं हुई है और पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर जांच कर रही है।



घटना की गंभीरता को देखते हुए फील्ड यूनिट एवं फोरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंची और साक्ष्य संकलित किए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कॉलेज/जिला अस्पताल लोढ़ी भेज दिया।फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट एवं पुलिस जांच के बाद ही घटना के कारणों की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।



(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जनपद सोनभद्र थाना पिपरी के प्रांगण में थाना इंचार्ज अजय कुमार श्रीवास्तव द्वारा पुराने परंपराओं को उन्होंने पुनः दोबारा लागू करते हुए पत्रकार से शिष्टाचार मुलाकात और दीवाली मिलन समारोह मनाया यह मिलन मीडिया जगत और समाज के प्रति एक अच्छा संदेश दिशा देने के कार्य किये।

भगवान चित्रगुप्त की आराधना से मिलती है सत्य, न्याय और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा- कमल श्रीवास्तव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। सोमवार को कायस्थ समाज के आराध्य देव भगवान श्री चित्रगुप्त महाराज के कलम-पूजन का कार्यक्रम विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी स्थानीय श्री चित्रगुप्त मंदिर में श्रद्धा, भक्ति एवं पारंपरिक उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कायस्थ समाज के लोगों ने एकत्रित होकर भगवान चित्रगुप्त महाराज का विधि-विधानपूर्वक पूजन-अर्चन किया तथा कलम एवं दवात का पूजन कर ज्ञान, लेखन, शिक्षा और बौद्धिक उन्नति के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। इस अवसर पर अखिल भारतीय चित्रांश सनातन महासभा के अध्यक्ष कमल श्रीवास्तव ने कहा कि भगवान श्री चित्रगुप्त महाराज केवल कायस्थ समाज के आराध्य ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज को सत्य, न्याय, धर्म और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देने वाले देवता हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान चित्रगुप्त समस्त जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा रखने वाले तथा न्याय के विधान में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले देव हैं। उनकी आराधना हमें यह स्मरण कराती है कि मनुष्य के प्रत्येक कर्म का अपना महत्व है और जीवन में सदैव सत्य, ईमानदारी एवं सदाचार का पालन करना चाहिए। जिलाध्यक्ष महामंत्री मोहित श्रीवास्तव ने बताया कि स्थानीय चित्रगुप्त मंदिर में भगवान चित्रगुप्त महाराज के पूजन-अर्चन के उपरान्त दिनांक 14 नवम्बर 2026 को सायं 5:00 बजे भगवान चित्रगुप्त महाराज की भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी। शोभायात्रा शहर के विभिन्न प्रमुख मार्गों से होते हुए पुनः श्री चित्रगुप्त मंदिर पहुंचकर सम्पन्न होगी। उन्होंने समाज के लोगों से शोभायात्रा में अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की।

पेंशनधारकों के लिए डाक विभाग की सौगात, अब घर बैठे बनेगा डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र- पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

भारत सरकार द्वारा पेंशनधारकों के लिए शुरू की गई बायोमेट्रिक और आधार-आधारित डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र सेवा, घर बैठे डाकिया द्वारा मिलेगी सुविधा- पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव,डाक विभाग की डोरस्टेप सेवा से पेंशनधारकों को डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र हेतु ट्रेजरी एवं बैंक जाने से मिलेगी मुक्ति-पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)रायबरेली/अहमदाबाद। अब पेंशनधारकों को जीवन प्रमाणपत्र (हयाती) जमा करने के लिए ट्रेजरी, बैंक या अन्य किसी विभाग में जाने की आवश्यकता नहीं है। पेंशनर अपने नजदीकी डाकघर के पोस्टमैन या ग्रामीण डाक सेवक के माध्यम से डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट जारी करवा सकते हैं। इसके लिए मात्र 70 रुपये का शुल्क निर्धारित किया गया है। यह प्रमाणपत्र स्वतः संबंधित विभाग को ऑनलाइन पहुंच जाएगा। इससे पेंशन मिलने में कोई रुकावट नहीं आएगी। उक्त जानकारी उत्तर गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने दी। यह पहल 'डिजिटल इंडिया' के विज़न को सशक्त बनाते हुए सरकारी सेवाओं को



नागरिकों के घर तक पहुँचाने की दिशा में डाक विभाग का एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी क्रम में अहमदाबाद में श्री घनश्यामभाई हरगोवनदास एवं श्रीमती जीविबेन दलाभाई परमार, जो कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के पेंशनभोगी हैं, का डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव की उपस्थिति में डाकिया के माध्यम से सफलतापूर्वक बनाकर इस सेवा का शुभारंभ किया गया। पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र जिसे 'जीवन प्रमाण' भी कहा जाता है, भारत सरकार द्वारा पेंशनभोगियों के लिए शुरू की गई एक बायोमेट्रिक और आधार-आधारित डिजिटल सेवा है। इसके माध्यम से केंद्र सरकार, राज्य सरकार या अन्य सरकारी संगठनों के पेंशनभोगी बिना बैंक या पेंशन कार्यालय जाए, घर बैठे ही अपने जीवित होने का प्रमाण पत्र ऑनलाइन जमा कर सकते हैं ताकि उनकी पेंशन बिना किसी रुकावट के जारी रहे। श्री यादव ने बताया कि इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के माध्यम से केंद्र व राज्य सरकार सभी विभागों के पेंशनरों को घर बैठे डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट प्रदान करने की सुविधा प्रदान की जा रही है। पेंशनर इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए अपने क्षेत्र के पोस्टमैन से संपर्क कर सकते



है। डाकिया पेंशनर के घर आकर बायोमेट्रिक डिवाइस (अंगूठे या उंगली के निशान) के जरिए उनका डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र बना देगा। इसके लिए पेंशनर को आधार नंबर, मोबाइल नंबर, और पीपीओ नंबर देना होगा। प्रमाणपत्र जनरेशन प्रक्रिया पूरी होने पर, पेंशनर को उनके मोबाइल नंबर पर एक पुष्टि एस.एम.एस प्राप्त होगा और प्रमाण पत्र को https://jeevanpramaan.gov.in/ppouser/login पर अगले दिन डाउनलोड किया जा सकेगा। इस पहल का उद्देश्य फेस ऑथेंटिकेशन (चेहरा प्रमाणीकरण) तकनीक और फिंगरप्रिंट बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन की डिजिटल प्रक्रिया के उपयोग को बढ़ावा देना है, जिससे सभी पेंशनरों, विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वालों को सुविधाजनक सेवाएं मिल सकें। उल्लेखनीय है कि जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2018 में देशभर में इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक का शुभारंभ किया था, तब 'बैंकिंग सेवाएं आपके द्वार' उनका प्रमुख विजन था। इसी विजन को आगे बढ़ाते हुए डाक विभाग के इंडिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक द्वारा पेंशन एवं पेंशनभोगी कल्याण विभाग के सहयोग से 1 से 30 नवंबर, 2026 तक राष्ट्रव्यापी डिजिटल जीवन प्रमाणपत्र अभियान 5.0 का आयोजन किया गया है।

गौरतलब है कि पेंशनरों को प्रत्येक वर्ष सामान्यतया नवंबर और दिसंबर माह में कोषागार, बैंक या संबंधित विभाग में जीवन प्रमाणपत्र प्रस्तुत करना होता है। इसके लिए दूरदराज इलाके के पेंशनरों को कोषागार आने में कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है एवं यात्रा आदि में भी काफी व्यय होता है। ऐसे में डाक विभाग की इस पहल से पेंशनरों को काफी सहूलियत मिलेगी। इसके साथ-साथ पेंशनर डाकिया के माध्यम से घर बैठे पेंशन की धनराशि आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम के माध्यम से अपने बैंक खाते से निकाल सकते हैं।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है


नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

स्पोर्ट्स



25 साल बाद पेरेंट्स के घर लौटी हूं:यहां मन नहीं लग रहा, अपनी अकेली जिंदगी याद आती है, क्या मैं स्वार्थी हूं

नयी दिल्ली। विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. द्रोण शर्मा, कंसल्टेंट साइकेट्रिस्ट, आयरलैंड, यूके। यूके, आयरिश और जिब्राल्टर मेडिकल काउंसिल के मेंबर जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से।



सवाल- मेरी उम्र 45 साल है। पिछले 25 सालों से मैं घर से दूर रह रही थी। पहले पढ़ाई और फिर जॉब के लिए। एक साल पहले ही मैं अपने होमटाउन में पेरेंट्स के घर में शिफ्ट हुई हूं। लेकिन जैसा मैंने सोचा था, वैसा बिल्कुल फील नहीं हो रहा। मुझे लगा था कि इतने साल बाद घर लौटना अच्छा लगेगा। ज्यादा सुकून और खुशी होगी। लेकिन इसका ठीक उल्टा हुआ है। मुझे ज्यादा तनाव और अकेलापन महसूस होने लगा है। यहां मेरा बिल्कुल मन नहीं लगता। मुझे अपनी अकेली जिंदगी की याद आती है। बेंगलुरु में मेरा घर और मेरी सिंगल लाइफ। ये बात मैं अपने पेरेंट्स से कैसे कहूं कि मुझे इस घर में रहना अच्छा नहीं लग रहा। मैं अपनी मेंटल हेल्थ को कैसे ठीक रखूं? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि आपकी भावनाएं गलत नहीं हैं। 25 साल तक घर से दूर रहना बहुत लंबा समय होता है। इस दौरान आपने सिर्फ पढ़ाई और नौकरी नहीं की, बल्कि अपनी पूरी जिंदगी अपने तरीके से जीना सीखा है। आपने तय किया होगा कि कब उठना है, कब खाना है, किससे मिलना है, कब घर से बाहर जाना है, छुट्टी कैसे बितानी है और कितना समय अकेले रहना है। अब एक साल से आप फिर उसी घर में हैं, जहां कभी आपकी जिंदगी की शुरुआत हुई थी। लेकिन इस बीच आप खुद बहुत बदल चुकी हैं। इसलिए घर वही होने के बावजूद आपका अनुभव पहले जैसा नहीं है। यह जरूरी नहीं कि आपका अपने माता-पिता से प्यार कम हो गया है। हो सकता है कि आपको सिर्फ अपनी पुरानी स्वतंत्र जिंदगी की कमी महसूस हो रही हो। 25 साल स्वतंत्र जीवन जीने के बाद माता-पिता के घर लौटना बड़ा बदलाव है। परिवार वही है, लेकिन व्यक्ति की आदतें, सोच और जरूरतें बदल चुकी हैं। इसलिए घर में रहते हुए घुटन या बेचैनी महसूस हो सकती है। घर लौटने की खुशी की जगह तनाव क्यों? लंबे समय तक अकेले रहने के बाद जब कोई व्यक्ति माता-पिता के साथ वापस रहने लगता है तो उसे अपनी आजादी कम होती हुई महसूस हो सकती है। माता-पिता का ये पूछना कि- 'कहां जा रही हो?' 'कब वापस आओगी?' 'खाना खाया या नहीं?' ये उनका प्यार और चिंता का तरीका हो सकता है। लेकिन इतने साल अपने फैसले खुद लेने के बाद यही बातें आपको रोक-टोक जैसी लग सकती हैं। इसी तरह परिवार के साथ खाना, हर दिन बातचीत करना और अपनी दिनचर्या में दूसरों को शामिल करना माता-पिता के लिए सामान्य हो सकता है। लेकिन आपको अपने अकेलेपन और पर्सनल स्पेस की जरूरत ज्यादा महसूस हो सकती है। इसमें किसी एक को गलत ठहराने की जरूरत नहीं है। दोनों की जरूरतें अलग हो सकती हैं।घर लौटने पर तनाव की वजह पुराने नियमों में लौटना। प्राइवेसी कम होना। पेरेंट्स के सवाल टोकाटाकी। दिनचर्या बदलना। पर्सनल स्पेस कम होना हर वक्त निगरानी में रहना। परेशानी की असल वजह क्या है? पहले यह समझें कि आपको वास्तव में परेशानी किस बात से है, जैसेकि- क्या आपको अपने कमरे में पर्याप्त निजी जगह नहीं मिलती? क्या आपके आने-जाने के समय पर सवाल होता हैं? क्या आप अपनी पसंद के अनुसार खाना, सोना या आराम करना चाहती हैं, लेकिन ऐसा नहीं कर पातीं? क्या दोस्तों से मिलने या बाहर जाने पर आपको सफाई देनी पड़ती है? क्या आपको लगता है कि घर में रहते हुए आप फिर से बेटी की उसी भूमिका में चली गई हैं, जबकि पिछले 25 सालों में आप अपने फैसले खुद लेने वाली एक स्वतंत्र महिला बन चुकी हैं? इन सवालों के जवाब आपको असली समस्या को समझने में मदद करेंगे। खुद से पूछें ये 7 सवाल- घर में मन क्यों नहीं लग रहा? क्या पेरेंट्स टोकाटाकी करते हैं? क्या पेरेंट्स हर बात पूछते हैं? क्या बाहर जाने पर टोकते हैं? क्या पर्सनल स्पेस नहीं मिलता ? क्या अपने फैसले नहीं ले पाती ? क्या हर बात की सफाई देनी पड़ती है? क्या दोस्तों से मिलने नहीं आ सकती? माता-पिता से बात कैसे करें? सबसे जरूरी बात यह है कि माता-पिता से यह न कहें कि मुझे आपके साथ रहना अच्छा नहीं लगता। ऐसा सुनकर उन्हें लग सकता है कि आप उनके प्यार या घर को अस्वीकार कर रही हैं। इसके बजाय अपनी परेशानी को अपनी जरूरत के रूप में बताएं। पहले चिट्?ठी लिखना भी अच्छा विकल्प-अगर आपको लगता है कि आमने-सामने बात करते समय आप अपनी बात ठीक से नहीं कह पाएंगी, तो पहले माता-पिता को एक पत्र भी लिख सकती हैं। यहां मैं आपके लिए एक काल्पनिक खत लिख रहा हूं। आप इसमें अपने मन की बातें लिख सकती हैं। प्यारे मम्मी-पापा, मैं आप दोनों से एक जरूरी बात कहना चाहती हूं। शायद सामने बैठकर मैं इसे ठीक से न कह पाऊं। इसलिए पत्र लिख रही हूं। सबसे पहले मैं आपको बताना चाहती हूं कि इतने साल बाद घर लौटने पर आपने जिस तरह मुझे अपनाया, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। मुझे पता है कि मेरे लिए आपके मन में बहुत प्यार है और आप चाहते हैं कि मैं आपके साथ रहूं। लेकिन पिछले 25 सालों में मेरी जिंदगी बहुत बदल गई है। मैं लंबे समय तक अकेले रही हूं। मुझे अपने समय, काम, फैसले और निजी जगह को अपने तरीके से संभालने की आदत हो गई है। घर लौटने के बाद मुझे महसूस हुआ कि मैं अपनी उस स्वतंत्र जिंदगी को बहुत याद कर रही हूं। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं आपसे दूर होना चाहती हूं। मैं सिर्फ यह समझने की कोशिश कर रही हूं कि आपके साथ रहते हुए अपनी स्वतंत्रता कैसे बनाए रखूं। मैं चाहती हूं कि हम मिलकर कुछ बातें तय करें। जैसे हम कितना समय साथ बिताएं, मुझे कब अपने काम या अकेले रहने का समय चाहिए और किन निजी फैसलों में मुझे अपनी आजादी बनाए रखने की जरूरत है। मैं यह भी समझती हूं कि मेरे घर लौटने के बाद आपको भी अपनी दिनचर्या में बदलाव करना पड़ा होगा। इसलिए मैं सिर्फ अपनी बात नहीं रखना चाहती। मैं आपकी परेशानी भी समझना चाहती हूं। मैं घर छोड़कर आपसे दूर नहीं जाना चाहती। मैं ऐसा रास्ता ढूंढना चाहती हूं, जिसमें हमारा रिश्ता भी अच्छा रहे और मैं अपनी स्वतंत्र पहचान भी बनाए रखूं। प्यार के साथ। घर में तय करें कुछ स्पष्ट सीमाएं- माता-पिता के साथ रहने का मतलब यह नहीं है कि आपकी सारी स्वतंत्रता खत्म हो जाए। आप मिलकर कुछ ऐसी बातें तय कर सकते हैं, जिनसे दोनों पक्ष सहज रहें। मसलन-आपके कमरे में आने से पहले दरवाजा खटखटाया जाए। आपके काम के समय में आपको परेशान न किया जाए। दोस्तों से मिलने या बाहर जाने के लिए हर बार इजाजत लेने की जरूरत न हो। हर दिन कुछ वक्त आपको अकेले रहने के लिए मिले। इसी तरह हर मील साथ लेना भी जरूरी न हो। आप कुछ समय परिवार के साथ बिताएं और कुछ समय अपनी पसंद से। लेकिन सीमाएं तय करते समय सिर्फ अपनी सुविधा के बारे में न सोचें। माता-पिता की भी अपनी दिनचर्या है। 25 सालों में उन्होंने भी अपने घर को अपने तरीके से चलाया होगा। इसलिए उनसे भी यह पूछें– 'मेरे यहां रहने से आपको किन बातों से परेशानी हो रही है?' इस सवाल से बातचीत एकतरफा नहीं रहेगी। दोनों पक्ष अपनी जरूरतें समझा पाएंगे। अपनी सीमाएं तय करना दूरी बनाना नहीं है।

स्वस्थ रिश्ते में दोनों पक्षों की जरूरतों का सम्मान होना चाहिए। वयस्क बच्चे को पर्सनल स्पेस चाहिए, वहीं माता-पिता को भी अपने घर और दिनचर्या में सहज रहने का अधिकार है। अपनी मेंटल के लिए क्या करें? सबसे पहले खुद को दोष देना बंद करिए। यह मत सोचिए कि 'मुझे तो खुश होना चाहिए, फिर मैं दुखी क्यों हूं?' भावनाएं इस तरह काम नहीं करतीं। अपनी पुरानी जिंदगी की वे चीजें वापस अपनी दिनचर्या में शामिल करें, जिनसे आपको अच्छा महसूस होता था। दोस्तों से मिलें, अकेले बाहर जाएं, टहलें, एक्सरसाइज करें, पढ़ें या अपने किसी पुराने शौक के लिए समय निकालें। सबसे जरूरी है कि आपकी पूरी जिंदगी सिर्फ घर और माता-पिता के इर्द-गिर्द न सिमट जाए। आपकी अपनी सामाजिक जिंदगी, काम, दोस्त, रुचियां और निजी समय भी जरूरी हैं। चार से छह सप्ताह तक कुछ बदलाव करके देखिए। फिर खुद से पूछिए- क्या अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूं? क्या मुझे अभी भी अलग रहने की उतनी ही जरूरत महसूस हो रही है? अगर बदलावों के बाद भी लगातार उदासी बनी रहे, किसी काम में मन न लगे, नींद या भूख में बड़ा बदलाव आए, बहुत ज्यादा चिंता हो, रोजमर्रा के काम प्रभावित होने लगें या जीवन को लेकर निराशा बढ़ने लगे, तो काउंसिलर से बात करना सही रहेगा। मेंटल हेल्थ के लिए क्या करें? खुद को दोष न दें, भावनाओं को स्वीकार करें। रोज़ थोड़ा समय अकेले बिताएं। अपना पुराना रुटीन फॉलो करें।



दुनिया भर में बढ़ रहे 'गाउट' के केस,पुरुषों को रिस्क ज्यादा, डॉक्टर से जानें इस बीमारी को कैसे पहचानें, कैसे बचें

जयपुर। पहले के समय में गाउट को 'राजाओं की बीमारी' कहा जाता था, क्योंकि इसे अमीर लोगों की डाइट और शराब पीने से जुड़ी बीमारी माना जाता था। हालांकि मेडिकल साइंस के मुताबिक, गाउट सिर्फ खानपान से होने वाली बीमारी नहीं है। यह एक तरह का इंफ्लेमेटरी अर्थराइटिस है, जिसमें ब्लड में यूरिक एसिड का लेवल बढ़ने पर उसके क्रिस्टल जोड़ों में जमा हो जाते हैं। इससे अचानक तेज दर्द के साथ गाउट का अटैक हो सकता है। 'द लैंसेट रेह्यूमेटोलॉजी' में पब्लिश 'ग्लोबल बर्डन डिजीज 2021' के मुताबिक, साल 2020 में दुनिया में 5.58 करोड़ लोग गाउट से प्रभावित थे। 1990 के मुकाबले मामलों की संख्या 150.6फीसदी बढ़ी हैं। 2050 तक दुनिया में गाउट के मामलों की संख्या 9.58 करोड़ पहुंचने का अनुमान है। इसलिए आज 'फिजिकल हेल्थ' में गाउट के बारे में विस्तार से बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- गाउट आखिर क्यों होता है? किन लोगों में इसका रिस्क ज्यादा है? इससे बचने के लिए क्या करें? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. मुजाहिद सलीम, सीनियर कंसल्टेंट, ऑर्थोपेडिक एंड जॉइंट रिप्लेसमेंट, अपोलो स्पेक्ट्रा हॉस्पिटल, जयपुर जे के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- गाउट क्या है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- गाउट एक तरह का इंफ्लेमेटरी अर्थराइटिस है। शरीर में यूरिक एसिड बढ़ने पर जोड़ों में दर्द और सूजन होने लगती है। बढ़ा हुआ यूरिक एसिड छोटे-छोटे क्रिस्टल बनाकर जोड़ों में जमा होने लगता है। इससे अचानक तेज दर्द, सूजन और रेडनेस हो सकती है। गाउट का असर सबसे ज्यादा पैर के अंगूठे के जोड़ पर होता है। लेकिन यह शरीर के अन्य जॉइंट्स को भी प्रभावित कर सकता है। सवाल- गाउट और सामान्य गठिया में क्या अंतर है? जवाब- गाउट और गठिया दोनों में जोड़ों में दर्द हो सकता है। लेकिन दोनों की वजह और दर्द का पैटर्न अलग होता है। गाउट और सामान्य गठिया में अंतरः- गाउटः- यूरिक एसिड क्रिस्टल से दर्द अचानक तेज होता हैं। सूजन, लालिमा, गर्माहट। दर्द अमूमन पैर के अंगूठे में।दर्द का अटैक जैसा पड़ना। सामान्य गठियाः- कार्टिलेज घिसने से दर्द धीरे-धीरे बढ़ता है। दर्द और अकड़ना दर्द घुटने, कूल्हे, हाथ में। लगातार बना रहने वाला दर्द। सवाल- गाउट क्यों होता है? जवाब- इसकी मूल वजह शरीर में यूरिक एसिड का संतुलन बिगड़ना है। ऐसा दो कारणों से हो सकता हैं। शरीर जरूरत से ज्यादा यूरिक एसिड बनाने लगे या किडनी उसे पर्याप्त मात्रा में बाहर न निकाल पाए। गाउट के संभावित कारणः- 1 यूरिक एसिड बढ़ना, प्यूरीन का ज्यादा टूटना। कुछ आनुवंशिक कारण। कुछ बीमारियों में सेल्स का तेजी से टूटना। 2 यूरिक एसिड कम फिल्टर होना- किडनी की बीमारी, डीहाइड्रेशन। 3 कुछ दवाओं का असर डाइयूरेटिक्स- लो- डोज एस्पिरिन कुछ इम्यूनोसप्रेसेंट दवाएं। ज्यादा मात्रा में नियासिन, पेशाब बढ़ाने वाली दवाएं. सवाल- जिसका भी यूरिक एसिड बढ़ा हुआ है, क्या उसे गाउट होता ही है? जवाब- नहीं, जिसका यूरिक एसिड बढ़ा हुआ है, उसे गाउट हो ही जाए, यह जरूरी नहीं है। कई लोगों का यूरिक एसिड सालों तक सामान्य से ज्यादा रह सकता है। लेकिन उनमें कभी गाउट के लक्षण नहीं दिखते। इसे 'असिम्प्टोमैटिक हाइपरयूरिसीमिया' कहते हैं।सवाल- यूरिक एसिड क्या है, इसका शरीर में क्या काम है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- यूरिक एसिड एक नेचुरल बाय-प्रोडक्ट है, जो शरीर में प्यूरीन नाम के पदार्थ के टूटने पर बनता है। प्यूरीन हमारी हर सेल में मौजूद होता है और कई फूड आइटम से भी मिलता है। जब शरीर पुरानी सेल्स को तोड़कर नई सेल्स बनाता है या प्यूरीन वाले फूड आइटम को पचाता है, तब यूरिक एसिड बनता है। आमतौर पर यह ब्लड के जरिए किडनी तक पहुंचता है और यूरिन के रास्ते शरीर से बाहर निकल जाता है। यानी यूरिक एसिड शरीर की सामान्य मेटाबॉलिज्म प्रक्रिया का हिस्सा है। ब्लड में सामान्य स्तर पर मौजूद यूरिक एसिड एंटीऑक्सिडेंट की तरह काम करता है। यह कुछ फ्री-रेडिकल्स और ऑक्सिडेंट्स को निष्क्रिय करके सेल्स को ऑक्सिडेटिव डैमेज से बचाने में मदद कर सकता है। हालांकि इसका मुख्य काम शरीर में जमा रहना नहीं, बल्कि बनने के बाद शरीर से बाहर निकल जाना है। समस्या तब होती है, जब शरीर जरूरत से ज्यादा यूरिक एसिड बनाने लगता है या किडनी इसे पर्याप्त मात्रा में बाहर नहीं निकाल पाती। ऐसे में ब्लड में इसका लेवल बढ़ने लगता है। सवाल- बढ़े हुए यूरिक एसिड लेवल से गाउट कैसे होता है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- जब ब्लड में यूरिक एसिड का लेवल लंबे समय तक बढ़ा रहता है, तो यह छोटे-छोटे नुकीले क्रिस्टल का रूप ले लेता है। ये क्रिस्टल धीरे-धीरे जॉइंट्स और उनके आसपास के टिश्यूज में जमा होने लगते हैं। इम्यून सिस्टम इन क्रिस्टल्स को खतरे (थ्रेट) की तरह देखकर इंफ्लेमेशन पैदा करता है। इससे अचानक तेज दर्द, रेडनेस, गर्माहट और सूजन जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं। इसी स्थिति को 'गाउट अटैक' कहते हैं। सवाल- क्या गाउट एक गंभीर बीमारी है? जवाब- हां, लंबे समय तक यूरिक एसिड का स्तर बढ़ा रहने पर जोड़ों में स्थायी नुकसान, गांठें (टोफी) और किडनी से जुड़े कॉम्प्लिकेशंस हो सकते हैं। सवाल- गाउट के शुरुआती लक्षण क्या हैं? जवाब- गाउट का शुरुआती अटैक अक्सर अचानक शुरू होता है और ज्यादातर रात में दिखाई देता है। गाउट के शुरुआती लक्षणः- 1 जोड़ों में अचानक दर्द। 2 जोड़ों में सूजन त्वचा पर लालिमा। 3 जोड़ों में गर्माहट महसूस होना। 4छूने पर बहुत दर्द या संवेदनशीलता। सवाल- शरीर के कौन से अंग या जॉइंट्स इससे सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं? जवाब- पैर के अंगूठे का जोड़ गाउट अटैक की सबसे कॉमन जगह हैं। समय के साथ बीमारी बढ़ने पर टखने, घुटने, पैर की उंगलियों के साथ हाथों की उंगलियां, कलाई और कोहनी भी प्रभावित हो सकते हैं। गाउट से प्रभावित होने वाले जॉइंट्सः- कोहनी, 'कलाई, घुटना, हाथों की उंगलियां, एड़ी, टखना, पैर का अंगूठा, पैर की उंगलियां, कम फिजिकल एक्टिविटी, खराब खानपान और ज्यादा वजन जैसी चीजें धीरे-धीरे यूरिक एसिड के लेवल को प्रभावित करती हैं। इससे गाउट का रिस्क बढ़ता है। गाउट का रिस्क बढ़ाने वाली 10 आदतें:-घंटों बैठे रहना। पानी कम पीना। नींद पूरी न करना। बॉडी वेट बढ़ना। प्रोसेस्ड फूड ज्यादा खाना। बिना सलाह सप्लीमेंट्स / दवाएं लेना। जोड़ों के दर्द- सूजन को इग्नोर करना। ब्रेकफास्ट डाइटिंग। करना। डायबिटीज, बीपी कंट्रोल न करना। बढ़े यूरिक एसिड को इग्नोर करना। किडनी हेल्थ को इग्नोर करना। सवाल- किन लोगों में गाउट का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- यह महिलाओं की तुलना में पुरुषों में लगभग तीन गुना ज्यादा देखा जाता है। महिलाओं में एस्ट्रोजन हार्मोन यूरिक एसिड को शरीर से बाहर निकालने में मदद करता है। इसलिए मेनोपॉज से पहले उनमें गाउट अपेक्षाकृत कम होता है। हालांकि मेनोपॉज के बाद इसका रिस्क बढ़ जाता है। किन्हें ज्यादा रिस्क है,गाउट का रिस्क इन्हें ज्यादाः- ओबीज़, बीमार काम इम्युनिटी वाले बुज़ुर्ग। सवाल- कौन-से फूड आइटम्स यूरिक एसिड बढ़ा सकते हैं? जवाब- जिन फूड आइटम्स में प्यूरीन की मात्रा ज्यादा होती है, उनसे यूरिक एसिड बढ़ सकता है। इनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं- रेड मीट, सी-फूड, शुगरी ड्रिंक्स, हाई-फ्रुक्टोज कॉर्न सिरप वाले फूड और ड्रिंक्स, ज्यादा प्रोसेस्ड और अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड शराब। यूरिक एसिड बढ़ने के लिए कोई एक फूड जिम्मेदार नहीं है। यूरिक एसिड का बढ़ना किडनी की कार्यक्षमता, वजन, जेनेटिक फैक्टर, लाइफस्टाइल और ईटिंग पैटर्न पर निर्भर करता है। इसलिए संतुलित डाइट के साथ रिस्क फैक्टर्स पर ध्यान दें। सवाल- अगर किसी को गाउट है तो उसकी डाइट कैसी होनी चाहिए? जवाब- गाउट की डाइट का मकसद यूरिक एसिड को कंट्रोल रखना है। इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखें-कम प्यूरीन वाले फूड आइटम्स लें। पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं। फल-सब्जियां ज्यादा खाएं। साबुत अनाज को डाइट में शामिल करें। लो-फैट या स्किम्ड दूध, दही जैसे डेयरी प्रोडक्ट लें। दालें, बीन्स, सोया और अन्य प्लांट बेस्ड प्रोटीन लें। शुगरी ड्रिंक्स न पिएं। शराब से दूरी बनाएं। क्रैश डाइटिंग या लंबे समय तक भूखे रहने से बचें।सवाल- गाउट का इलाज क्या है? जवाब- इसके इलाज में दवाएं, खानपान में बदलाव और लाइफस्टाइल में सुधार शामिल हैं। गाउट अटैक के दौरान डॉक्टर दर्द और सूजन कम करने के लिए दवाएं दे सकते हैं। बार-बार अटैक आने या यूरिक एसिड लंबे समय तक बढ़ा रहने पर यूरिक एसिड कम करने वाली दवाएं दी जा सकती हैं। लो-प्यूरीन डाइट अपनाने, पर्याप्त पानी पीने, वजन कंट्रोल रखने और शराब से परहेज की सलाह दी जाती है। सही इलाज और नियमित फॉलो-अप से गाउट को मैनेज किया जा सकता है। सवाल- क्या हेल्दी लाइफस्टाइल से गाउट को ठीक किया जा सकता है? जवाब- हेल्दी लाइफस्टाइल गाउट को मैनेज करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन केवल इसके सहारे गाउट ठीक हो जाए, जरूरी नहीं है। बैलेंस्ड डाइट और वेट मैनेजमेंट से यूरिक एसिड का स्तर कम करने में मदद मिलती है। सवाल- गाउट से कैसे बचें? जवाब- इसे पॉइंटर्स में देखिए-हाइड्रेटेड रहें। वेट कंट्रोल करें। हाई-प्यूरीन फूड्स का सेवन सीमित करें। शराब न पिएं। शुगरी ड्रिंक्स और सॉफ्ट ड्रिंक्स से दूरी बनाएं। रेगुलर फिजिकल एक्टिविटी करें। क्रैश डाइटिंग या लंबे समय तक भूखे रहने से बचें। डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर और किडनी डिजीज को नियंत्रित रखें। रेगुलर हेल्थ चेकअप कराएं।



गाउट के शुरुआती लक्षण दिखें तो इलाज में देरी न करें। गाउट से जुड़े कॉमन मिथ-फैक्ट्सः-मिथ- गाउट सिर्फ बुजुर्गों को होता है। फैक्ट- नहीं। गाउट कम उम्र में भी हो सकता है। मिथ- नींबू पानी पीने से गाउट ठीक हो जाता है। फैक्ट- नहीं। इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। मिथ- गाउट सिर्फ नॉनवेज खाने वालों को होता है। फैक्ट- नहीं। यह बात साइंटिफिक रूप से साबित नहीं हुई है। मिथ- यूरिक एसिड बढ़ने पर दाल खाना बंद कर देना चाहिए। फैक्ट- नहीं, संतुलित मात्रा में दालें खाई जा सकती हैं।

दिवाली सेलेब्रेशन में सुरक्षा सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए

जिन बच्चों का बचपन अभावों में गुजरता है, उनके लिए दिवाली खास तौर पर रोमांचक त्योहार होता है। कुछ बच्चों को दो वक्त के खाने के लिए भी मशक्कत करनी पड़ती है। उनके पैरेंट्स नए कपड़े या पटाखों का डिब्बा तक नहीं खरीद पाते। लेकिन दूसरे बच्चों की तरह वे भी पटाखे जलाने, उन्हें फूटते देखने और दोस्तों के साथ खुशनुमा पल बिताने की इच्छा रखते हैं। उन्हें फेंके हुए पटाखे भी मिल जाएं तो यह उनके लिए त्योहार की अनमोल खोज होती है। इस गुरुवार को गुजरात में 13-15 साल के तीन लड़के भी ऐसी ही छोटी-सी खुशी तलाशने निकले थे। वे पड़ोस के वांच गांव में एक वाटर-चैनल के पास फेंके गए सामान में पटाखे ढूंढ रहे थे। उन्हें कुछ मिल भी गए। लेकिन जिसे वो चंद रोमांचक पलों की वजह मान रहे थे, वही खौफनाक धमाके में बदल गई। पुलिस के मुताबिक, उनमें से किसी लड़के ने बेकार सामान में पटाखा फेंका होगा, जिससे विस्फोट हो गया। तीनों घायल हो गए। 14 वर्षीय एक लड़के का चेहरा, हाथ और पैर झुलस गए। उसे अहमदाबाद के सिविल अस्पताल में भर्ती कराया गया। बाकी दो के भी हाथों में चोटें आईं। उनके परिवारों पर आए दुख की कल्पना कीजिए। बच्चे दिवाली की थोड़ी-सी खुशी तलाशने निकले थे, लेकिन एक बच्चे को अस्पताल में दर्द झेलना पड़ रहा है। जो बचपन का मासूम रोमांच होना चाहिए था, हादसा बन गया। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि खुशियां बांटने का त्योहार आखिरकार ऐसे दुखद हालात क्यों छोड़ जाता है, जिन्हें टाला जा सकता था। समान रूप से चिंताजनक यह भी है कि सरकारी एजेंसियों ने शायद ऐसी आपात स्थितियों को त्योहारों में होने वाली सालाना घटनाएं मान लिया है। गुजरात में बीते वर्षों के ट्रेंड के आधार पर ईएमआरआई 108 इमरजेंसी सर्विस ने अनुमान लगाया है कि ऐसी आपात स्थितियों में दिवाली के दिन 16फीसदी और न्यू-ईयर डे पर 29फीसदी बढ़ोतरी हो सकती है। इनमें रोड एक्सीडेंट, बर्न इंजरी और गिरने के मामले ज्यादा अनुमानित हैं। कितना दुखद है कि इमरजेंसी सर्विसेज लगभग यह प्रिडिक्ट कर सकती हैं कि त्योहार में कितने अधिक लोगों को उनकी मदद चाहिए होगी। अगर यह अनुमान हर साल सही होते हैं तो हमारे सामूहिक सामाजिक व्यवहार में कोई गंभीर गड़बड़ है। भारत लगातार शिक्षित, समृद्ध और सिविक रेस्पॉन्सिबिलिटीज के प्रति जागरूक हो रहा है। लेकिन शिक्षा हमें अधिक जिम्मेदार बनानी चाहिए, महज ज्यादा क्वालिफाइड नहीं। त्योहार मनाने का मतलब दूसरों की सुरक्षा को नजरअंदाज करना नहीं हो सकता। कोई भी परिवारों से दिवाली की खुशियां छोड़ने को नहीं कह रहा। बच्चों को एंजॉय करना चाहिए, परिवारों को साथ में सेलेब्रेट करना चाहिए और घर रोशन होने चाहिए। लेकिन क्या हम थोड़ी सावधानी से सेलेब्रेट नहीं कर सकते? खतरनाक पटाखों से बचें, बच्चों को बिना निगरानी पटाखे न चलाने दें, खुले स्थानों पर पटाखे फोड़ें और बिना फूटे या फेंके हुए पटाखों को हाथ न लगाएं। पटाखों के मैन्युफैक्चरर्स और यूजर्स, दोनों की बराबर जिम्मेदारी है। एक्सप्लोसिव प्रोडक्शन वेस्ट को ऐसी जगह नहीं फेंका जा सकता, जहां आमजन पहुंच सकते हों। प्रशासन को इसका सुरक्षित डिस्पोजल और मैन्युफैक्चरिंग यूनिटों का निरीक्षण सुनिश्चित करना चाहिए। लापरवाही से कचरा फेंककर लोगों की जान खतरे में डालने वालों को सजा देनी चाहिए। शायद हमें फिर से तय करने की जरूरत है कि सच में दिवाली को खुशहाल क्या बनाता है। यह सबसे तेज आवाज का जश्न, सर्वाधिक रोशनी या सबसे ज्यादा पटाखे नहीं हैं। बल्कि वास्तविक खुशी तब है, जब अगली सुबह हर परिवार सुरक्षित हो, हर बच्चा मुस्कराता दिखे और कोई इमरजेंसी वार्ड के बाहर बेचैनी से इंतजार न कर रहा हो। किसी बच्चे को थोड़ी-सी खुशी के लिए खतरनाक कचरे में पटाखे न ढूंढने पड़ें। कोई परिवार यह दिवाली किसी हादसे के लिए याद न रखे। इस साल रोशनी का यह पर्व बिना कोई अंधेरा छोड़े, सिर्फ खुशियां फैलाए। फंडा यह है कि दिवाली-2026 पर हम सब एक सामूहिक संकल्प लें कि हम जिम्मेदारी के साथ त्योहार मना सकते हैं, भले ही हमें थोड़ा-सा रोमांच कुर्बान करना पड़े। थोड़ी सावधानी बरतना कोई अनुचित त्याग नहीं है। एन. रघुरामन





स्त्रियों की बुद्धिमत्ता को क्या हम कम करके आंकते हैं?

गुजराती की लोक-कथाओं में गांगली नामक एक लड़की की कहानी मिलती है। गांगली से दूध लाने को कहो तो वो दही ले आएगी। वह कोई भी काम ठीक से नहीं कर पाती और ये शब्द- 'गांगली तो गांगली ही रही', आज भी कई बार कहे-सुने जाते हैं, जब घर की औरतों से कोई भूल हो जाती है। गुजराती की लेखिका इला अरब मेहता का हाल ही में देहांत हुआ। उनकी लिखी गई एक कहानी में लीलावती नाम की घर की बहू, एक बेटी की मां, और पत्नी- तीनों भूमिकाओं में सबको 'गांगली' ही लगती है। लीलावती भी यह सुन-सुनकर मानने लगती है कि वह कमअक्ल है। वह अपनी बेटी की शादी में फटी हुई साड़ी पहनती है और सबकी डांट खाती है। वह दुकान में जाकर अपनी बचाई हुई छोटी-सी पूंजी से साड़ी की जगह घर के लिए पायदान ले आई थी। फिर भी लीलावती अपने आपको कोई 'विक्टिम' नहीं समझती, क्योंकि उसने अपने बारे में जो सुना, उसे ही सत्य मान लिया था। संयुक्त कुटुम्ब में चारों तरफ से एक बहू को कहा जाए कि उसकी दाल ठीक नहीं बनती, उसकी चाय बेस्वाद है, वह अपने बच्चे को सम्भालना नहीं जानती तो वह खुद को 'गांगली' ही समझेगी ना? लेखिका कहानी को पायदान की बात पर छोड़ देती हैं।एक ओर मध्यम वर्ग की लीलावती है और उसकी रचयिता इला अरब मेहता हैं, तो दूसरी ओर गुजरात के नीरव पटेल की एक कविता है, जो एक भीषण सत्य की ओर ले जाती है। कविता कुछ इस तरह से है कि एक दलित स्त्री कहती है, रोज सुबह मैं जब सफाई करने जाती हूं तो कहीं से लपककर एक परछाई मुझ पर चढ़ जाती है, नोच लेती है मुझे और इस परछाई के प्रतीक उच्चवर्णीय होते हैं। नीरव पटेल की इस कविता का शीर्षक है- मी-टू। कवि का कटाक्ष उन सब की तरफ है, जो सिर्फ अपने वर्ग में होते अपमानों को अहमियत देते हैं। किंतु जो ऐतिहासिक तौर पर हमेशा से होता आया है, उसकी ओर कोई ध्यान नहीं। न शोषण एक रूप में सामने आता है, और न ही उसके विरोध में उठते स्वर, फिर हम यह सरल-सी बात क्यों भूल जाते हैं? क्या हर तरह के शोषण को समझकर, उन्हें उनके परिप्रेक्ष्य में रखकर हम एक नहीं परंतु अनेक तरह के नारीवाद को समझ सकते हैं और अपने पाठकों को, विद्यार्थियों को समझा सकते हैं? फेमिनिज्म या नारीवाद को ही ले लीजिए। इन शब्दों की कल्पना करते ही हमारे सामने एक खास छवि उत्पन्न होती है- पढ़ी-लिखी शहरी औरतें, जो पितृसत्ता जैसे ढांचों को समझती हैं और उनके बारे में एक विशिष्ट शब्दावली का उपयोग करके अपनी बात रखती हैं। किंतु रोजमर्रा की जिंदगी में कई ऐसी औरतें भी मिलती हैं, जिन्होंने विश्विद्यालय के दरवाजे तक नहीं देखे, परंतु वे हर पहलू से फेमिनिस्ट हैं। मिसाल के तौर पर, आज सुबह किरण- जो मेरे यहां साफ-सफाई का काम करती है- मुझसे कहने लगी- 'सच तो ये है कि औरतों में ज्यादा अक्ल है, पर मर्दों ने उनको कमअक्ल कहकर नीचे दिखाया है।' अब मैं उससे यह पूछने लगूं कि इस बारे में तुमने सबसे बड़ा रोड़ा तो विचारों का है, उससे आगे जाकर आप जिंदगी में क्या कर पाते हैं- यह तो रिसोर्सेज़ या संसाधन का प्रश्न है।

किरण अपने घर-गृहस्थी के पाए को समझी है, पर उसे उसी घर-गृहस्थी में रहना होगा, क्योंकि उसके पास इतने विकल्प नहीं हैं।

उसको उकसाकर मैं उसके जीवन में खलल नहीं डाल सकती- वह न मेरा हक है, न ही वह मेरा विषय, जब तक कि वह कुछ कहे मुझसे।

फिलहाल तो उसके शब्दों को मैंने सुना और कहा, तुम ठीक कहती हो, बेटा, और बात आई-गई हो गई। जाग्रति बदलाव की शुरुआत है और कई बार जाग्रति अपने आप में एक बदलाव होती है।

किस हद तक किसको जाना है, इस बात को लेकर सवाल पूछना हमारा हक नहीं बनता, परंतु किसकी शुरुआत कहां से हुई है, यह समझना जरूर हमारा फर्ज बनता है।

जाग्रति बदलाव की शुरुआत है और कई बार जाग्रति अपने आप में एक अहम बदलाव होती है। किस हद तक किसको जाना है, इस बात को लेकर सवाल पूछना हमारा हक नहीं बनता, परंतु किसकी शुरुआत कहां से हुई है, यह समझना जरूर हमारा फर्ज बनता है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं,रीटा कोठारी)



पश्चिम के चश्मे से ही साहित्य का मूल्यांकन क्यों होता रहे?

इस वर्ष साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए मनोनीत लेखकों में भारत के 94 वर्षीय दिग्गज गुलजार भी शामिल थे। शब्दों को करीने से गढ़ने वाले गुलजार भारत के घर-घर में पहचाने जाते हैं। अनुवादों के माध्यम से वे दुनिया भर में भी सम्मानित हैं। उनके लेखन का विस्तार विस्मयकारी है। कविता, फिल्मी गीत, बाल साहित्य, नाटक, कहानियां, गद्य रचनाएं और पटकथाएं- उनकी लेखनी ने इन सभी विधाओं को समृद्ध किया है। उनकी उम्र और साहित्य के प्रति आजीवन समर्पण को देखते हुए यह उचित ही होता कि उनके साहित्यिक अवदान को सम्मानित किया जाता। लेकिन निर्णायकों ने कनाडाई लेखिका ऐन कार्सन को चुना। यकीनन, कार्सन भाषाशास्त्र की सक्षम विदुषी हैं, लेकिन गुलजार की विपुल और जीवंत साहित्यिक रचनाधर्मिता का महत्व भी कम नहीं ठहराया जा सकता। स्वीडन में बैठी समिति ने पश्चिम की जानी-पहचानी भाषाओं के सुविधाजनक दायरे से बाहर किसी साहित्यिक प्रतिभा को तलाशने की जेहमत नहीं उठाई। साहित्य का नोबेल पाने वाले आखिरी और इकलौते भारतीय रबींद्रनाथ ठाकुर थे, जिन्हें यह सम्मान 1913 में मिला था। उसके बाद एक सदी से भी अधिक समय बीत चुका है। क्या हम सचमुच यह मान लें कि 1.4 अरब की आबादी वाले इस उपमहाद्वीप में- जहां 24 अत्यंत विकसित साहित्यिक भाषाएं हैं और जिनकी लिखित परम्पराएं सहस्राब्दियों पुरानी हैं- एक भी ऐसा लेखक नहीं हुआ, जो इस पुरस्कार के योग्य हो? स्टॉकहोम की संकीर्ण दृष्टि और संस्थागत उपेक्षा के चलते गैर-पश्चिमी दुनिया के जिन साहित्यकारों को ऐतिहासिक रूप से इस सम्मान से वंचित रहना पड़ा, उनकी सूची चौंकाने वाली है। मसलन, अर्जेंटीना के होर्खे लुईस बोर्खेस, अफ्रीका के चिनुआ अचेबे और न्यूगी वा थ्योंगो या सीरिया के अदूनिस- इन सभी की अनदेखी की गई। भारत में प्रेमचंद, आर.के. नारायण, वैकम मुहम्मद बशीर और महाश्वेता देवी जैसे लेखकों के नामों पर भी कभी विचार नहीं किया गया। यहां तक कि लियो टॉल्स्टॉय जैसे दिग्गज को भी इस सम्मान से वंचित रखा गया। इतनी चूकों के बाद यह पुरस्कार वैश्विक उत्कृष्टता का पैमाना कैसे हो सकता है? सच यह है कि विज्ञान के विषयों को अपवाद मान लें, तो बाकी क्षेत्रों में ये पुरस्कार काफी हद तक यूरोप-केंद्रित होकर रह गए हैं- जहां पश्चिम का आक्रामक वर्चस्व है और चयन मनमाना तथा पक्षपातपूर्ण है। आंकड़े खुद हकीकत बयां करते हैं। 1901 में पुरस्कार की शुरुआत से लेकर अब तक साहित्य के 123 नोबेल विजेताओं में अकेले फ्रांस के हिस्से 15 विजेता आए हैं। वह इस सूची में सबसे ऊपर है। उसके ठीक पीछे अमेरिका और ब्रिटेन हैं। भाषा के आधार पर देखें तो अंग्रेजी में लिखने वाले लेखकों को 30 पुरस्कार मिले हैं। इसके बाद, अपेक्षानुसार, फ्रेंच को 16, जर्मन को 14 और स्पैनिश को 11 पुरस्कार मिले हैं। इन चार पश्चिमी भाषाओं को मिलाकर देखें तो साहित्य के वैश्विक नोबेल पुरस्कारों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा इन्हीं के खाते में चला जाता है। शेष दुनिया- जिसमें एशिया, मध्य-पूर्व और अफ्रीका की प्राचीन सभ्यताएं शामिल हैं- के हिस्से बहुत कम ही आ पाया है। इसका एक कारण यह भी है कि नोबेल पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव है। फैसले गोपनीयता के आवरण में लिए जाते हैं और उन्हें न तो सार्वजनिक पड़ताल के दायरे में लाया जाता है, न ही विशेषज्ञों की समीक्षा के लिए प्रस्तुत किया जाता है। इससे पुरस्कार के चयन पर तात्कालिक भू-राजनीतिक हितों का प्रभाव हावी होने की गुंजाइश बन जाती है। नोबेल शांति पुरस्कार को ही लें। आधुनिक काल में शांति के सबसे बड़े प्रतीक महात्मा गांधी को 14 बार इस पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया, पर उन्हें यह सम्मान नहीं मिला। इसके उलट, रिचर्ड निक्सन और हेनरी किसिंजर को यह पुरस्कार दे दिया गया, जबकि वियतनाम में उन्हीं के कार्यकाल में बमबारी हुई थी। दुर्भाग्य से- खासकर विकासशील देशों में- लोग स्वीडन या नॉर्वे में बैठे निर्णायकों के फैसलों को जरूरत से ज्यादा महत्व देते हैं। अनुवाद की बाधा को बहाने के रूप में पेश करना दरअसल अपनी विफलता स्वीकार करना है।

यदि कोई पुरस्कार खुद को वैश्विक बताता है, तो दुनिया के साहित्य को पढ़ने-समझने की क्षमता विकसित करने की जिम्मेदारी उस संस्था की है, न कि दुनिया की यह जिम्मेदारी है कि वह खुद को यूरोप के एक छोटे से अभिजात वर्ग की भाषाओं में अनूदित करे।

हमें भी अपने मूल्यांकन के मानदंडों को उपनिवेशवादी प्रभावों से मुक्त करना होगा। नोबेल की उपेक्षा से हमारे साहित्य की गरिमा कतई कम नहीं होती। (ये लेखक के अपने विचार हैं,पवन के. वर्मा)



आप कैसे हैं? जिंदगी को 'मैंटेन' कर रहे हैं या 'बदल' रहे हैं?

मैंने उनसे पूछा कि 'आप कैसे हैं?' वर्माजी बड़े खिन्न अंदाज में बोले कि 'मुझे लगता है कि मेरी 'टू-डू-लिस्ट' मेरे दुनिया से जाने के बाद भी खत्म नहीं होगी।' उन्होंने अपने साथियों की शिकायत की, जो ऑफिस में उनका समय खराब करने में लगे रहते हैं। इसलिए वर्माजी खुद को ओवरलोडेड महसूस करते और हमेशा तनाव में घर लौटते थे। ये 6 महीने पुरानी बात है। इसीलिए शाम को परिवार के साथ जो समय मिलता, वो भी खराब हो जाता था। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या करूं? मैंने उन्हें एक लाइन की सलाह दी- 'एक 'नॉट-टू-डू लिस्ट' बनाना शुरू कीजिए।' बड़ी मासूमियत से वर्माजी ने पूछा कि 'आपका मतलब है कि पुरानी 'टू-डू-लिस्ट' के साथ मैं यह नई लिस्ट भी जारी रखूं?' उनके बच्चों जैसे सवाल पर मैं मुस्कुराया और कहा, 'आप 'हैम्स्टर-व्हील' लाइफ में फंसे हुए हैं, इसलिए आपको क्लाउडिया हैमंड की किताब 'ओवरव्हेल्म्ड: वेज टू टेक द प्रेशर ऑफ' पढ़नी चाहिए।' 'हैम्स्टर-व्हील' लाइफका मतलब है ऐसी दिनचर्या, जिसमें आप दिन-रात काम करते हैं और बेहद व्यस्त रहते हैं, लेकिन असल में कभी ठोस प्रगति नहीं कर पाते और न ही किसी नई दिशा में बढ़ पाते हैं। इस रविवार वे मेरे घर आए और उस एक छोटी-सी टिप के लिए मुझे धन्यवाद दिया। 'हैम्स्टर-व्हील' लाइफ का अर्थ अनिवार्य तौर पर बहुत ज्यादा काम करना ही नहीं है। इसका मतलब है असल में जो चीज मायने रखती है, उसके करीब पहुंचे बिना बहुत-सी चीजें बार-बार करते रहना। इससे बाहर निकलने के कुछ व्यावहारिक तरीके यहां पेश हैं। 1 काम करना रोकें, फैसले लेना शुरू करें दिन शुरू करने से पहले उस एक काम की पहचान करें, जो दिन को वास्तव में प्रोडक्टिव बनाएगा। बाकी सब सेकंडरी है। आपकी 'टू-डू-लिस्ट' तीन हिस्सों में बंटी होनी चाहिए। ए. 'डू इट', यानी जिस काम को आपके अलावा कोई और नहीं कर सकता। बी. 'डेलीगेट इट', इसे ही 'नॉट-टू-डू-लिस्ट' कहते हैं। इसमें गैरजरूरी मीटिंग, कॉल, स्क्रॉलिंग, छोटे-मोटे काम और जिम्मेदारियां शामिल कर सकते हैं। सी. 'डिलीट इट' यानी ऐसे काम जो सहकर्मियों को खुश करने के लिए किए जाते हैं, लेकिन यहां दिखाई देते हैं। खुद से पूछें कि 'अगर मैंने यह काम नहीं किया तो क्या होगा?' अगर जवाब है, 'कुछ नहीं', तो उसे डिलीट कर दें। एन. रघुरामन



आज के बिशु और सूरज कल के वेलुसामी बन सकते हैं

'गुड मॉर्निंग स्टूडेंट्स, आप सभी की तरह हर एडमिशन सीजन में हजारों स्टूडेंट्स अपने साथ किसी बैकपैक से कहीं अधिक बड़ी चीज लेकर विश्वविद्यालयों में प्रवेश करते हैं। कुछ अपने उन पैरेंट्स के सपने लाते हैं, जो कभी क्लास में गए ही नहीं। कुछ ऐसे परिवारों की उम्मीदें लाते हैं, जिनमें कभी किसी ने ग्रेजुएशन गाउन नहीं पहना। और कई ऐसी जिम्मेदारी के साथ आते हैं, जिसे उन्होंने कभी चुना ही नहीं। अगर आपके साथ भी ऐसा ही है तो मेरी बात याद रखिएगा। आप महज एक डिग्री शुरू नहीं कर रहे हैं। आप परिवार के इतिहास का एक नया चैप्टर शुरू कर रहे हैं।' इंदौर में गुरुवार सुबह मैंने अपना लेक्चर ऐसे ही शुरू किया। जब मैंने उनसे पूछा कि आपमें से कितने ऐसे हैं, जो परिवार में पहली बार यूजी कोर्स में दाखिला ले रहे हैं तो कई ने हाथ उठा दिए। तब मैंने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनाई, जिनका जन्म तमिलनाडु के नमक्कल जिले के एक छोटे किसान परिवार में हुआ था। इस परिवार के लिए जिंदगी जीना महत्वाकांक्षाओं से कहीं ज्यादा मायने रखता था। उनके पिता पहली कक्षा के बाद ड्रॉप-आउट हो गए थे। मां कभी स्कूल नहीं गईं। उन्हें नोट गिनने में भी मुश्किल होती थी। घर में किताबें दुर्लभ थीं। बिजली नहीं थी। कोई मार्गदर्शक नहीं था। परिवार में कोई भी ऐसा नहीं था, जो एल्जेब्रा, फिजिक्स या करियर चॉइस के बारे में समझा सके, क्योंकि पहले उस राह पर कोई चला ही नहीं। वे बिना किसी कोचिंग और परिवार की सहायता के सरकारी स्कूल में पढ़े थे। जब वे मद्रास (अब चेन्नई) में एंट्रेंस एग्जाम देने गए तो शिक्षकों ने उनसे कहा कि सिर्फ परीक्षा पर ध्यान देना, दूसरों के कपड़ों पर नहीं। उन्होंने वैसा ही किया और लौट आए। कुछ हफ्तों बाद एक रात जब केरोसिन लैंप बुझ गए तो उनकी मां ने कहा कि तुम्हारे लिए एक चिट्ठी आई थी, जिसे छत के नीचे बांस में खोंसकर रखा है। उन्होंने पत्र खोला तो वह मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) में ऑटोमोबाइल इंजीनियरिंग का एडमिशन लेटर था। वर्षों बाद वही फर्स्ट-जनरेशन ग्रेजुएट आर. वेलुसामी ऑटोमोटिव टेक्नोलॉजी एंड प्रोडक्ट डेवलपमेंट के प्रेसिडेंट बने। आज वेलुसामी उन हजारों कर्मचारियों का नेतृत्व करते हैं, जो पूरे भारत में पसंद की जाने वाली गाड़ियां बनाते हैं। इनमें स्कॉर्पियो, एक्सयूवी-300, एक्सयूवी-700 और थार-रॉक्स शामिल हैं। अब 2026 में चलते हैं। असम के तिनसुकिया जिले में बिशु लिम्बू ने केरोसिन लैंप की मद्धिम रोशनी तले नीट की तैयारी की थी, क्योंकि उनके घर में न भरोसेमंद बिजली थी, न इंटरनेट। उनके पिता छोटे किसान हैं। उनकी मां एक-एक पैसा संभालकर खर्च करती थीं। लेकिन बिशु ने यह मानने से इनकार किया कि डॉक्टर का सफेद कोट सिर्फ अमीर परिवारों के बच्चों के लिए होता है। उन्होंने नीट-2026 में 720 में से 610 अंक हासिल किए और अब मेडिकल कॉलेज में दाखिले की तैयारी कर रहे हैं। अब राजस्थान के बूंदी जिले के कापरेन गांव में सूरज सैनी से मिलने चलते हैं। वे 12वीं तक हिंदी मीडियम स्टूडेंट रहे। छुट्टियों में परिवार की मदद के लिए वे गांव के घरों में पुताई करते थे।

12वीं तक वे नीट के बारे में जानते तक नहीं थे, क्योंकि परिवार में पहले कोई उस रास्ते पर नहीं चला था। पहले अटेम्प्ट ने उन्हें सिखाया कि सही दिशा के बिना प्रयास काफी नहीं होता। उन्हें सही गाइडेंस मिला, अथक मेहनत की और 583 अंक हासिल कर सरकारी मेडिकल कॉलेज में सीट हासिल कर ली। वर्षों की पढ़ाई, अनुशासन और लगातार मेहनत से कल आप भी दूसरे वेलुसामी बन सकते हैं- जो प्रोडक्ट्स बनाए, कंपनियों का नेतृत्व करे, रोजगार पैदा करे और हजारों की प्रेरणा बने। हर सफल परिवार में कोई ऐसा जरूर होता है, जिसने पहला ग्रेजुएट बनने का साहस किया था। अगर इस साल आप परिवार के पहले ग्रेजुएट बनने के लिए कॉलेज में प्रवेश ले रहे हैं, तो आपको लग सकता है कि आपका सबसे बड़ा लक्ष्य डिग्री हासिल करना है। लेकिन ऐसा नहीं है। आपका असली लक्ष्य ऐसा इंसान बनना है, जिसकी ओर देखकर आपके छोटे भाई-बहन कहें कि 'अगर वह ऐसा कर सकता है, तो मैं भी कर सकता हूं।' फंडा यह है कि आपके एडमिशन लेटर पर सिर्फ आपका नाम होता है, लेकिन उससे बनने वाला भविष्य पूरे परिवार का होता है। आप सिर्फ एक स्टूडेंट नहीं हैं, बल्कि ऐसे एक्सप्लोरर हैं- जो बिना नक्शे के किसी जंगल से अपना रास्ता बना रहे हैं। एन. रघुरामन



हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में चमकना है तो अपने काम में 'स्टाइल' लाइए

इन दिनों मैं देखता हूं कि कॉलेज से पास-आउट युवा सूट और टाई के आकर्षण में आकर हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में आने की कोशिश करते हैं। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें समझ आता है कि यहां ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे वे किसी दूसरे से करने के लिए कह सकें, लेकिन खुद न करना चाहें। अचानक-से वे खुद को टेबल से पानी और वाइन के गिलास उठाते और उसे साफ करते हुए पाते हैं। उस समय उनकी आंखें टेबल के बजाय इधर-उधर देखती ज्यादा नजर आती हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि वे नहीं चाहते कि कोई परिचित या परिजन उन्हें यह काम करते हुए देखे। इसमें हैरानी नहीं कि युवाओं में हॉस्पिटैलिटी को कामचलाऊ पेशा माना जाता है, लेकिन यह उनको कई ऐसी महत्वपूर्ण स्किल्स देता है, जो दूसरी इंडस्ट्री शायद ही देती है। आप पूछ सकते हैं कि आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाए बिना हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री में कैसे टिके रहें। मेरा सीधा-सा जवाब है- 'स्टाइल कोशंट' जोड़िए। जापानी मिल्क-बन का उदाहरण लीजिए, जो मीठे, मुलायम और फोटोजेनिक होते हैं। ये जापान ही नहीं, पूरे यूरोप और अमेरिका में भी बेहद सफल हैं। ये बन ऊपर से सुनहरे भूरे और अंदर से बादल की तरह मुलायम होते हैं। ऊपरी तौर पर देखें तो ये मुंबई में किसी चौपाटी के स्टॉल पर पावभाजी के साथ परोसे जाने वाले पाव जैसे दिखेंगे। लेकिन किसी शेफ की फोटोजेनिक नजरों से वही बन उसके बर्गर को कल्ट-बर्गर बना सकते हैं और उसकी कीमत 300फीसदी बढ़ा सकते हैं। मुझे हाई-एंड केक बनाने के आर्ट के बारे में तब पता चला, जब एक मशहूर बेकर ने अभिनेत्री काजोल के लिए बनाए जाने वाले केक पर लिखा जाने वाला हनी ईरानी का मैसेज गलती से मेरे दोस्त को भेज दिया। काजोल ने 5 अगस्त को अपना जन्मदिन मनाया और हनी ईरानी भारतीय सिनेमा की वेटरन एक्ट्रेस और पुरस्कार विजेता स्क्रीनराइटर हैं।

ट्रम्प ने हार के लिए इजराइल को जिम्मेदार ठहराया,बोले- अमेरिकी जनता उससे बहुत नाराज है

ईरान जंग और महंगे पेट्रोल से भी नुकसान हुआ

वॉशिंगटन डीसी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने मिडटर्म चुनाव में पार्टी की हार की वजह इजराइल को बताया हैं। उन्होंने



रविवार को सीबीएस न्यूज के कार्यक्रम '60 मिनट्स' में कहा कि इजराइल को लेकर अमेरिकी लोगों में बहुत नाराजगी है। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी लोग इजराइल को भले ही पसंद नहीं करते, लेकिन हमारी सरकार इजराइल के काफी करीब है। ट्रम्प ने हार की और दूसरी भी वजहें गिनाईं। उन्होंने कहाः- 'सबसे पहली बात, मैं चुनाव नहीं लड़ रहा था। इसके अलावा लोगों को रिपब्लिकन पार्टी के कुछ उम्मीदवार भी पसंद नहीं आए। ईरान जंग और पेट्रोल की बढ़ती कीमतों से भी जनता में नाराजगी थी। गाजा युद्ध के बाद बदली अमेरिकी लोगों की रायः-7 अक्टूबर 2023 को हमास के हमले के बाद इजराइल ने गाजा में सैन्य कार्रवाई शुरू की थी। इसके बाद अमेरिका में इजराइल को लेकर लोगों की राय बदलने लगी। खासकर डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थकों में इजराइल के लिए समर्थन घटा है। अमेरिकी लोगों की राय में कितना बदलाव आया, 2 सर्वे से समझिएः-1. प्यू रिचर्स सेंटर (3 अक्टूबर 2025)ः सर्वे के मुताबिक, 59फीसदी अमेरिकी इजराइली सरकार को लेकर नकारात्मक राय रखते थे। 2024 की शुरुआत में यह आंकड़ा 51फीसदी था। 2. गैलप (29 जुलाई 2025)ः गाजा में इजराइल की सैन्य कार्रवाई का समर्थन करने वाले अमेरिकी 2023 में 50फीसदी थे, जो जुलाई 2025 में घटकर 32फीसदी रह गए। डेमोक्रेट समर्थकों में यह समर्थन सिर्फ 8फीसदी था। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने भी 4 नवंबर कहा था कि अगर रिपब्लिकन पार्टी को आने वाले चुनाव जीतने हैं, तो उसे इजराइल के साथ अपने रिश्तों पर दोबारा विचार करना होगा। '60 मिनट्स' में ट्रम्प की 6 और बड़ी बातेंः-1. ईरान पर हमला करने के फैसले को सही बताया- ट्रम्प ने कहा कि अगर उन्हें दोबारा ईरान पर हमला करने का फैसला लेना पड़े, तो वह फिर ऐसा ही करेंगे। उनका कहना था कि ईरान को परमाणु हथियार बनाने से रोकना जरूरी था। उन्होंने दावा किया कि अमेरिका ने ईरान को परमाणु हथियार हासिल करने से रोक दिया है। हालांकि, उन्होंने माना कि इस फैसले का आज और आने वाले दिनों में राजनीतिक नुकसान हो सकता है। 2. इजराइल को बचाने का श्रेय खुद को दिया- ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका ने ईरान के परमाणु ठिकानों पर बी-2 बमवर्षक विमानों से हमला किया था। उनके मुताबिक, अगर अमेरिका यह कार्रवाई नहीं करता तो इजराइल का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता था। अमेरिका ने इजराइल की सुरक्षा के लिए बड़ी भूमिका निभाई है। 3 यूक्रेन का नक्शा बदलने की बात कही-ट्रम्प ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म हो जाएगा। हालांकि, उन्होंने संकेत दिया कि युद्ध के बाद यूक्रेन की सीमाओं और क्षेत्र में बदलाव हो सकता है। उन्होंने कहा कि यूक्रेन पहले जैसा नहीं रह सकता और उसका नक्शा थोड़ा अलग हो सकता है। 4. राष्ट्रपति उम्मीदवार के लिए किसी का समर्थन नहीं किया-2028 के राष्ट्रपति चुनाव के लिए किसी उम्मीदवार के समर्थन पर उन्होंने किसी का नाम नहीं लिया। उन्होंने जेडी वेंस और विदेश मंत्री मार्को रूबियो की तारीफ की, लेकिन किसी एक को अपना उत्तराधिकारी घोषित नहीं किया। उन्होंने कहा कि पार्टी में कई अच्छे नेता हैं और वह चुनाव में किसी का समर्थन करें या नहीं, यह अभी तय नहीं है।

5. संपत्ति बढ़ने पर बोले- पैसे का हिसाब बेटे देखते हैं- पत्रकार ने ट्रम्प से पूछा कि राष्ट्रपति बनने के बाद उनकी संपत्ति करीब 3 अरब डॉलर बढ़ने की रिपोर्ट आई है। इस पर ट्रम्प ने कहा कि वह अपनी संपत्ति पर ज्यादा ध्यान नहीं देते और उनके बेटे कारोबार और पैसों का हिसाब देखते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रपति रहते हुए सैलरी नहीं लेता।

मिडटर्म इलेक्शन में हार से ट्रम्प बौखलाए,अमेरिका 18 हजार भारतीयों को डिपोर्ट कर सकता है, एच-1बी वीजा में और सख्ती

न्यूयॉर्क। अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प मिडटर्म चुनाव में हार से बौखलाए हुए हैं। लगभग



65फीसदी भारतवंशी वोटरों ने डेमोक्रेटिक उम्मीदवारों के पक्ष में वोट दिए। अब ट्रम्प सरकार एच-1बी वीजा में सख्ती और 18 हजार अवैध भारतीयों के डिपोर्टेशन में तेजी ला सकती है। अमेरिका ने 2025 में 3567 भारतीयों को डिपोर्ट किया था, जो 15 साल में सबसे अधिक था। इस साल जून तक 1076 डिपोर्ट किए जा चुके हैं। भारत से इस साल एच-1बी वीजा के 1.06 लाख रजिस्ट्रेशन हुए। पिछले साल 1.72 लाख रजिस्ट्रेशन हुए थे। जनवरी 2024 से जून 2026 के बीच सोशल मीडिया पर भारत विरोधी नफरत 240फीसदी बढ़ी। जनवरी 2024 में भारत विरोधी 12,904 पोस्ट थीं, जो जून 2026 में बढ़कर 43,843 हो गई थीं। इसमें मेगा एमएजीए का रोल माना जाता है। ट्रम्प समर्थ?क श्वेत कट्?टरपंथी खुद को एमएजीए कहते हैं। एमएजीए यानी मेक अमेरिका ग्रेट अगेन। वे भारतीयों के बढ़ते दबदबे को नापसंद करते हैं। ट्रम्प बोले- अवैध प्रवासियों को माफी नहीं मिलेगीः-ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद अमेरिकी सरकार की निर्वासन नीति सख्त हो गई है। उन्होंने सोमवार को कहा कि अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे लोगों को कोई माफी नहीं मिलेगी। मिडटर्म चुनाव में हार के बाद ट्रम्प ने डेमोक्रेट्स के साथ इमिग्रेशन नीति पर समझौते के संकेत भी दिए थे। उन्होंने रविवार को कहा था कि हत्यारों और ड्रग तस्करों को देश से निकालना चाहिए। हालांकि, टैक्स देने वाले और लैंडस्केपिंग, होटल जैसे क्षेत्रों में काम करने वाले अच्छे लोगों को अमेरिका में रहने देने पर विचार किया जा सकता है। लेकिन सोमवार को उन्होंने अपना रुख साफ करते हुए कहा, 'माफी नहीं मिलेगी। वे यहां आए थे और उन्हें कानून पता था।' ट्रम्प समर्थकों की नारेबाजी- सभी भारतीयों को देश से निकालोः-दो दिन पहले सिएटल में दिवाली मना रहे भारतीयों के कार्यक्रम में ट्रम्प समर्थक पहुंच गए थे। उनके हाथों में कुछ पोस्टर थे, जिन पर लिखा था- 'सभी भारतीयों को देश से निकालो' और 'हिंदू ईसाइयों की जगह ले रहे हैं।' वहां मौजूद लोगों ने नारेबाजी कर रहे प्रदर्शनकारियों का विरोध किया और उन्हें कार्यक्रम से बाहर निकाला। ट्रम्प समर्थकों का आरोप है कि मिडटर्म चुनाव में ट्रम्प की पार्टी की हार के पीछे भारतीयों का हाथ है। इस घटना पर भारतीय मूल की अमेरिकी सांसद प्रमिला जयपाल ने नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि हिंदू समुदाय को बिना किसी डर के अपना त्योहार मनाने का हक है। हमारे शहर और देश में नफरत फैलाने वाली ऐसी हरकतों की कोई जगह नहीं है। भारतीयों के खिलाफ नारेबाजी करने वालों में से एक की पहचान जैक लैंग के रूप में हुई है। वह राष्ट्रपति ट्रम्प का समर्थक है। कार्यक्रम से बाहर निकाले जाने के बाद जैक लैंग ने हिंदुओं पर ही आरोप लगाने शुरू कर दिए। उसने कहा कि हिंदुओं ने टेक्सास में डेमोक्रेटिक पार्टी को जिताने में मदद की है। लैंग ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि दिवाली कार्यक्रम में एंटीफा और हिंदू समुदाय के दर्जनों लोगों ने उस पर और उसके साथियों पर हमला किया। उसने दावा किया कि लोगों ने उसके साथ मारपीट की और उसका झंडा तोड़ दिया। जैक लैंग 'व्हाइट रिप्लेसमेंट' नाम का संगठन चलाता है। 6 जनवरी 2021 को जब ट्रम्प समर्थकों ने अमेरिकी संसद भवन कैपिटल हिल पर हमला किया था, तब जैक लैंग भी उनमें शामिल था।इस मामले में उस पर पुलिसवालों के साथ मारपीट समेत कई आरोप लगे थे। वह करीब चार साल जेल में रहा। जनवरी 2025 में ट्रम्प ने राष्ट्रपति बनने के बाद उसे माफी दे दी थी। इसके बाद भी वह प्रवासियों, मुस्लिमों और दूसरे समुदायों के खिलाफ कई विरोध प्रदर्शनों में शामिल रहा है। 2026 में उसने फ्लोरिडा से रिपब्लिकन पार्टी के टिकट पर अमेरिकी सीनेट का चुनाव लड़ने की कोशिश भी की थी।

रिपोर्ट-चुनाव से पहले ईरान पर हमला करना चाहते थे नेतन्याहू,मोसाद चीफ के साथ बनाया था प्लान, ट्रम्प को भनक लगी तो हमला रुका

तेल अवीव। उन्होंने कहा था कि सेना प्रमुख के साथ उनका कोई विवाद नहीं है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा था कि



उन्होंने सेना और मोसाद को ईरान की मौजूदा सरकार गिराने का निर्देश दिया है। अमेरिका और ईरान के बीच जंग रोकने पर बातचीत चल रही हैः- अमेरिका और ईरान के बीच कतर की मदद से बातचीत जारी है। दोनों देश जंग खत्म करने का रास्ता तलाश रहे हैं। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के दोबारा हमले शुरू करने पर विचार करने की खबरें भी आई हैं। चैनल-12 के मुताबिक, अमेरिकी मिडटर्म चुनाव से पहले नेतन्याहू ने ट्रम्प से कहा था कि मतदान खत्म होते ही ईरान पर फिर हमला किया जाए। लेकिन ट्रम्प फिलहाल ईरान से बातचीत को कुछ और समय देना चाहते हैं। नेतन्याहू को डर है कि बातचीत आगे बढ़ी तो ईरान पर लगे प्रतिबंध और दूसरे दबाव कम हो सकते हैं। शुक्रवार को ट्रम्प ने भी कहा कि अमेरिका ईरान से बात कर रहा है और उसके साथ बातचीत अच्छी चल रही है।ट्रम्प ने यह दावा भी किया कि अगर उन्होंने ईरान को परमाणु हथियार बनाने से नहीं रोका होता, तो आज इजराइल और पूरा मिडिल ईस्ट सुरक्षित नहीं होता। ईरान और इजराइल के बीच विवाद की 4 बड़ी वजहः- 1979 में दुश्मनी शुरू हुईः ईरान में इस्लामी क्रांति के बाद नई सरकार ने इजराइल का विरोध शुरू कर दिया था। उसका कहना था कि इजराइल ने फिलिस्तीनियों की जमीन पर कब्जा कर रखा है। इसके बाद दोनों देशों के रिश्ते टूट गए। इजराइल विरोधी संगठन का समर्थनः ईरान फिलिस्तीनियों और हमास-हिजबुल्लाह जैसे इजराइल विरोधी संगठनों का समर्थन करता है। इजराइल इसे अपनी सुरक्षा के लिए खतरा मानता है। परमाणु हथियारों का डरः ईरान कहता है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण कामों के लिए है। लेकिन इजराइल को शक है कि वह परमाणु बम बना रहा है। इससे सुरक्षा का खतरा है। दोनों देश एकदूसरे पर हमला करते रहे हैंः कई साल तक दोनों देश छिपकर एक-दूसरे पर हमले करते रहे। 2024 और जून 2025 में दोनों के बीच सीधे मिसाइल और हवाई हमले भी हुए। इजराइल और अमेरिका ने मिलकर ईरान पर हमला किया थाः-28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजराइल ने मिलकर ईरान पर बड़ा हमला किया था। इसमें ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामेनेई समेत कई बड़े सैन्य और सुरक्षा अधिकारी मारे गए थे। हमलों में ईरान के सैकड़ों मिसाइल ठिकानों, एयर डिफेंस सिस्टम, सैन्य अड्डों और सेना के कमांड सेंटरों को निशाना बनाया गया। तेहरान समेत कई शहरों में इमारतों को नुकसान पहुंचा। इसके जवाब में ईरान ने इजराइल और खाड़ी देशों में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर मिसाइल और ड्रोन हमले किए।

ट्रम्प बोले-हुआंग को नहीं पता था महिला चीनी जासूस है,एनवीडिया के सीईओ अच्छे इंसान हैं

वॉशिंगटन डीसी। फॉक्स न्यूज के मुताबिक, बोर्ड ने कहा है कि जानकारी निवेशकों से छिपाई।शेयरधारकों का कहना है



अब तक उसे ऐसा कोई सबूत नहीं मिला है जिससे लगे कि अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा या कंपनी की गोपनीय जानकारी खतरे में पड़ी हो। इसी बीच, सोमवार को कंपनी के शेयरधारकों ने एनवीडिया और हुआंग के खिलाफ मुकदमा दायर किया। उनका आरोप है कि कंपनी ने हुआंग के कथित संबंधों से जुड़ी कि यह मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा था और इससे कंपनी की छवि और कारोबार को नुकसान पहुंच सकता था। रिपोर्ट के मुताबिक, हुआंग ने कंपनी के कर्मचारियों से कहा था कि उन्होंने अपनी पत्नी को धोखा दिया है। हालांकि, उन्होंने एलिस हुआंग के साथ कथित संबंधों को लेकर कुछ नहीं कहा। चीन बोला- देश को बदनाम करने की कोशिशः-चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता गुओ जियाकुन ने सोमवार को इन खबरों पर प्रतिक्रिया दी। उनसे द न्यूयॉर्क टाइम्स की एक रिपोर्ट के बारे में पूछा गया था। इस रिपोर्ट में अमेरिकी खुफिया एजेंसियों के हवाले से दावा किया गया था कि हुआंग के करीब रही एक चीनी कारोबारी महिला बीजिंग को खुफिया जानकारी दे रही थी। इस पर गुओ ने कहा'- ये खबरें बेबुनियाद अटकलें हैं और चीन को बदनाम करने की कोशिश हैं।' भारत में चीनी दूतावास की प्रवक्ता यू जिंग ने भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर गुओ के जवाब का वीडियो शेयर किया। उन्होंने कहा कि चीन जेन्सन हुआंग से जुड़े कथित चीनी जासूस के आरोपों को पूरी तरह खारिज करता है।

एनवीडिया पर जेन्सन की इतना प्रभाव कि हटाना आसान नहीं,कंपनी में उनकी जगह लेने वाला कोई नहीं,चीनी महिला से अफेयर की जांच शुरू

वॉशिंगटन डीसी। एनवीडिया में 60 से ज्यादा अधिकारी सीधे उन्हें रिपोर्ट करते हैं। यानी कंपनी के अधिकारियों को अपने फैसलों के लिए बीच के कई स्तरों से नहीं गुजरना पड़ता। हुआंग पद और रैंक के आधार पर काम बांटने के बजाय अलग-अलग प्रोजेक्ट पर ध्यान देते हैं। 2023 में एक पॉडकास्ट में उन्होंने कहा था कि कौन किसके नीचे काम करता है, इसका चार्ट बनाना उन्हें समझ नहीं आता। वे प्रोजेक्ट के हिसाब से बैठकें करते हैं। इनमें कॉलेज



से नए निकले कर्मचारी से लेकर कंपनी के बड़े अधिकारी तक शामिल होते हैं। हर कोई सीधे उनके सामने अपनी बात रख सकता है। हुआंग का दावा है कि वे रोजाना कंपनी के कर्मचारियों के हजारों ईमेल पढ़ते हैं। उनके काम करने के इस तरीके की तुलना एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स से की जाती है। जॉब्स की तरह हुआंग भी कंपनी के लगभग हर अहम काम पर खुद नजर रखते हैं और बड़े फैसलों में सीधे शामिल होते हैं। बोर्ड में भी हुआंग के पुराने कारोबारी साझेदारः-एनवीडिया के बोर्ड में कुल 11 सदस्य हैं। इनमें कंपनी के सह-संस्थापक और सीईओ जेन्सन हुआंग भी शामिल हैं। बोर्ड के सदस्यों में दो ऐसे लोग हैं, जो उन निवेश कंपनियों से जुड़े रहे हैं, जिन्होंने 1993 में एनवीडिया में शुरुआती निवेश किया था। वहीं, दो और सदस्य 1990 के दशक में एनवीडिया के साथ काम करने वाली चिप डिजाइन कंपनी सिंप्सिस से जुड़े रहे हैं। कंपनी के तीन पूर्व कर्मचारियों के मुताबिक, एनवीडिया में असली फैसले जेन्सन हुआंग ही लेते हैं। बोर्ड की भूमिका कंपनी के कामकाज में ज्यादा नहीं रही है। अब वही बोर्ड हुआंग के खिलाफ जांच कर रहा है। बोर्ड ने कहा कि फिलहाल ऐसा कोई सबूत नहीं मिला है, जिससे लगे कि एनवीडिया की गोपनीय जानकारी चीन तक पहुंची है या अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा को नुकसान हुआ है। ट्रम्प से नजदीकी, अमेरिकी एआई नीतियों पर भी असरः-हुआंग की अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के साथ भी अच्छी नजदीकी है। दोनों के बीच अक्सर फोन पर बातचीत होती है। एक बार टेक्नोलॉजी समिट के दौरान भी ट्रम्प ने हुआंग को अचानक फोन लगा दिया था। हुआंग ने पिछले साल ट्रम्प को चीन को चिप बेचने पर लगी पाबंदियां हटाने के लिए मनाया था। हुआंग का तर्क था कि चीन जैसे बड़े बाजार से अमेरिकी कंपनियों को पूरी तरह दूर रखने से उनका कारोबार प्रभावित होगा और चीन अपनी चिप इंडस्ट्री को तेजी से आगे बढ़ा सकता है। इस तरह हुआंग सिर्फ एनवीडिया का कारोबार ही नहीं संभालते, बल्कि अमेरिकी सरकार की टेक्नोलॉजी नीतियों को प्रभावित करने में भी उनकी अहम भूमिका रही है। बेटे-बेटी और दामाद को भी कंपनी में बड़े पदः- बेटा स्पेंसर हुआंगः कंपनी में प्रोडक्ट मैनेजमेंट के डायरेक्टर हैं। रोबोटिक्स से जुड़े कामों में उनकी बड़ी भूमिका है। बेटी मैडिसन हुआंगः प्रोडक्ट मार्केटिंग की सीनियर डायरेक्टर हैं। वे रोबोटिक्स के साथ कंपनी के संचार और मार्केटिंग का काम भी देखती हैं। दामाद निको कैप्रेजः कंपनी में बिजनेस डेवलपमेंट का काम संभालते हैं। परिवार के सदस्यों को मिल रही इन जिम्मेदारियों से कंपनी के कुछ कर्मचारी नाराज भी हैं। उन्हें लगता है कि हुआंग अपने बच्चों को भविष्य में कंपनी की कमान संभालने के लिए तैयार कर रहे हैं। इससे कंपनी के भीतर काम करने के तरीके पर भी असर पड़ा है। बैठकों में हुआंग के बच्चों की अपने पिता तक सीधी पहुंच होती है। वहीं, कंपनी के हर बड़े फैसले में आखिरी मंजूरी हुआंग ही देते हैं। कुछ ग्राहक, सप्लायर और कारोबारी सलाहकार भी अब उनके बच्चों के साथ अपने रिश्ते मजबूत कर रहे हैं। हुआंग हटे तो कौन संभालेगा एनवीडिया? फिलहाल यह साफ नहीं है कि जांच कब तक पूरी होगी। यह भी तय नहीं है कि जांच के बाद हुआंग को सीईओ पद से हटाया जाएगा या नहीं। लेकिन अगर उन्हें हटाया जाता है तो कंपनी के सामने नया बॉस चुनने की चुनौती होगी। हुआंग ने खुद कहा है कि उनकी जगह लेने के लिए कंपनी में कई लोग हैं। उनके बेटे और बेटी भी इनमें शामिल हो सकते हैं। हालांकि, एनवीडिया का कामकाज काफी हद तक हुआंग के भरोसे चलता है। कंपनी के बड़े फैसले वही लेते हैं। ऐसे में उनके हटने पर कंपनी को संभालना आसान नहीं होगा। बोर्ड के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि अगर हुआंग नहीं रहे तो एनवीडिया की कमान किसे सौंपी जाए?

शेख हसीना को पासपोर्ट नहीं देगा बांग्लादेश,मंत्री बोले- वह मौत की सजा की दोषी

भारत से कैदी अदला-बदली समझौते के तहत वापस लाएंगे

ढाका/नयी दिल्ली। बांग्लादेश सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को नया पासपोर्ट देने से इनकार कर



दिया है। विदेश राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने सोमवार को कहा कि हसीना को मौत की सजा सुनाई जा चुकी है, इसलिए उन्हें पासपोर्ट नहीं दिया जाएगा। सरकार उन्हें भारत से वापस लाना चाहती है।कबीर ने कहाः- शेख हसीना का नया पासपोर्ट बनवाने का आवेदन हास्यास्पद है। उन्हें फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। एक दोषी और हत्यारा इस तरह का आवेदन नहीं कर सकता।' उन्होंने कहा कि बांग्लादेश ने भारत से हसीना को दोनों देशों के बीच कैदी अदला-बदली समझौते के तहत वापस भेजने को कहा है। कबीर ने उन लोगों पर भी सवाल उठाए, जो पैसे लेकर हसीना की पैरवी कर रहे हैं। दरअसल, हसीना दिसंबर में बांग्लादेश लौटना चाहती हैं। इसके लिए उन्होंने नए पासपोर्ट और राष्ट्रीय पहचान पत्र (एनआईडी) की मांग की है। उनके वकीलों ने सोमवार को नई दिल्ली स्थित बांग्लादेश हाई कमीशन को पत्र भेजकर दोनों दस्तावेज जारी करने की मांग की थी। यूनुस सरकार ने रद्द किए थे पासपोर्ट और पहचान पत्रः-शेख हसीना के बांग्लादेश छोड़ने के बाद मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार ने उनके दस्तावेज रद्द कर दिए थे। अगस्त 2024 में सत्ता से हटने के बाद उनका राजनयिक पासपोर्ट रद्द कर दिया गया था। जनवरी 2025 में जुलाई-अगस्त 2024 के आंदोलन के दौरान हुई हत्याओं के मामले में उनका सामान्य पासपोर्ट भी रद्द कर दिया गया। अप्रैल 2025 में चुनाव आयोग ने उनका राष्ट्रीय पहचान पत्र लॉक कर दिया था। 17 नवंबर 2025 को सुनाई गई थी मौत की सजाः- बांग्लादेश की इंटरनेशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल ने 17 नवंबर 2025 को शेख हसीना को मौत की सजा सुनाई थी। अदालत ने उन्हें 2024 के छात्र आंदोलन को कुचलने के दौरान मानवता के खिलाफ अपराधों का दोषी माना था। अदालत के मुताबिक, प्रदर्शनकारियों पर जानलेवा कार्रवाई के आदेश देने में हसीना की भूमिका थी। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, जुलाई-अगस्त 2024 के आंदोलन के दौरान करीब 1,400 लोगों की मौत हुई थी। हसीना ने अपने ऊपर लगे आरोपों से इनकार किया है। उन्होंने अदालत के फैसले को भी खारिज करते हुए मुकदमे को राजनीतिक बदले की कार्रवाई बताया था। 5 अगस्त 2024 को देश छोड़कर भारत आई थीं हसीनाः-बांग्लादेश में जून 2024 में सरकारी नौकरियों में आरक्षण के खिलाफ छात्र आंदोलन शुरू हुआ था। हाईकोर्ट ने 1971 की आजादी की लड़ाई में शामिल स्वतंत्रता सेनानियों के बच्चों और पोते-पोतियों को सरकारी नौकरियों में 30फीसदी आरक्षण देने का फैसला सुनाया था। छात्रों ने इसका विरोध किया।

उनकी मांग थी कि सरकारी नौकरियों में भर्ती आरक्षण के बजाय योग्यता के आधार पर हो। जुलाई में प्रदर्शन तेज हो गए। पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच हिंसक झड़पें हुईं। पुलिस पर प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने और जरूरत से ज्यादा बल इस्तेमाल करने के आरोप लगे।

इसके बाद छात्रों ने हसीना के इस्तीफे की मांग शुरू कर दी। धीरे-धीरे आंदोलन पूरे देश में फैल गया। 5 अगस्त 2024 को हजारों प्रदर्शनकारी ढाका की ओर बढ़े और हसीना के सरकारी आवास तक पहुंच गए। इसके बाद हसीना सैन्य विमान से भारत आ गईं। तब से वह भारत में रह रही हैं।

पीएम मोदी की यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की से फोन पर बात,युद्ध खत्म करने में मदद की पेशकश की, कहा- शांति की हर प्रयास में साथ हैं

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की से फोन पर बात की। इस दौरान मोदी ने रूस-यूक्रेन युद्ध का



शांतिपूर्ण समाधान निकालने की कोशिशों में भारत की ओर से हरसंभव मदद देने की बात कही। प्रधानमंत्री कार्यालय के मुताबिक, मोदी ने कहा कि युद्ध का हल बातचीत और कूटनीति से ही निकलना चाहिए। उन्होंने भरोसा दिलाया कि भारत शांति की कोशिशों में अपना योगदान देने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भारत इस युद्ध को इंसानियत के नजरिए से देखता है। मोदी पहले भी कई बार कह चुके हैं कि यह युद्ध का दौर नहीं है और किसी भी विवाद को बातचीत से सुलझाया जाना चाहिए। यह बातचीत ऐसे समय हुई है, जब रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म कराने की कोशिशें फिर तेज हो रही हैं। अमेरिका, यूरोप और रूस के बीच इस मुद्दे पर लगातार बातचीत और बयानबाजी चल रही है। ऐसे में जेलेंस्की का मोदी से बात करना अहम है। भारत के रूस और यूक्रेन, दोनों देशों से अच्छे रिश्ते हैं। मोदी पिछले चार साल से दोनों देशों के नेताओं के संपर्क में हैं। वह कभी रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से तो कभी जेलेंस्की से बात करते रहे हैं। भारत का रुख शुरू से यही रहा है कि युद्ध का कोई सैन्य समाधान नहीं है। दोनों देशों को बातचीत और कूटनीति के जरिए विवाद सुलझाना चाहिए। मोदी ने सितंबर 2022 में पुतिन से मुलाकात के दौरान भी कहा था कि यह युद्ध का दौर नहीं है। जेलेंस्की पहले भी मोदी से मांग चुके हैं भारत का साथः-26 फरवरी 2022: रूस के हमले के तुरंत बाद जेलेंस्की ने मोदी को फोन कर संयुक्त राष्ट्र में राजनीतिक समर्थन मांगा था। 26 दिसंबर 2022: फोन पर बातचीत के दौरान जेलेंस्की ने अपना 10 सूत्रीय शांति प्रस्ताव लागू कराने में भारत की मदद मांगी थी। 20 मई 2023: जापान के हिरोशिमा में जी7 समिट में मोदी और जेलेंस्की की युद्ध के बाद पहली व्यक्तिगत मुलाकात हुई थी। जेलेंस्की ने शांति वार्ता में भारत के शामिल होने का न्योता दिया था। 20 मार्च 2024: जेलेंस्की ने पीएम मोदी को फोन किया। उन्होंने यूक्रेन की 'क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता' का समर्थन करने के लिए धन्यवाद दिया। जेलेंस्की भारत से मदद क्यों मांगते हैं? 1. रूस पर भारत का असरः भारत के रूस और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ अच्छे रिश्ते हैं। जेलेंस्की चाहते हैं कि भारत अपने रिश्तों का इस्तेमाल करके रूस को बातचीत के लिए तैयार करे। 2. दूसरे देशों को साथ लाने में मददः भारत को एशिया, अफ्रीका और दूसरे विकासशील देशों में काफी अहमियत दी जाती है। जेलेंस्की को लगता है कि भारत का साथ मिलने से उनके शांति प्रस्ताव को इन देशों का भी समर्थन मिल सकता है। 3. दोनों देशों से अच्छे रिश्तेः भारत ने युद्ध में न तो रूस का खुलकर साथ दिया और न ही यूक्रेन का। वह लगातार दोनों देशों से बातचीत करके युद्ध खत्म करने की अपील करता रहा है। जेलेंस्की चाहते हैं कि भारत इसी स्थिति का फायदा उठाकर शांति की कोशिशों में मदद करे। भारत-यूक्रेन के रिश्ते मजबूत करने पर भी बातः-दोनों नेताओं ने भारत और यूक्रेन के बीच सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा की। उन्होंने अलग-अलग क्षेत्रों में मिलकर काम करने के तरीकों पर बात की, ताकि दोनों देशों के लोगों को इसका फायदा मिल सके। हालांकि, प्रधानमंत्री कार्यालय ने यह नहीं बताया कि किन क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई। यह भी जानकारी नहीं दी गई कि बातचीत के दौरान कोई नया समझौता हुआ है या नहीं। युद्ध शुरू होने के बाद से दोनों देशों के संपर्क में भारतः-रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध शुरू होने के बाद से भारत दोनों देशों के संपर्क में है। भारत ने यूक्रेन को मानवीय मदद भी भेजी है। वहीं, रूस के साथ भी भारत के पुराने और मजबूत रिश्ते हैं। भारत का लगातार यही कहना रहा है कि युद्ध खत्म करने का रास्ता बातचीत और कूटनीति से ही निकलेगा। प्रधानमंत्री मोदी रूस और यूक्रेन, दोनों देशों के नेताओं के सामने यह बात रख चुके हैं।

अमित शाह ने परिवार संग देखी रणबीर कपूर की 'रामायण',वीडियो वायरल-यूजर्स बोले- भगवान राम भाजपा और मोदी से बड़े

मुंबई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें वे अपने परिवार के साथ रणबीर कपूर की फिल्म 'रामायण' देखकर थिएटर से बाहर निकलते नजर आ रहे हैं। वीडियो सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर फिल्म को लेकर पहले से चल रही बहस फिर तेज हो गई है। कुछ यूजर्स ने भाजपा समर्थकों पर तंज कसते हुए कहा कि भगवान राम किसी पार्टी या नेता से बड़े हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, अमित शाह 8 नवंबर को दिवाली के मौके पर अपने परिवार के साथ अहमदाबाद के एक सिनेमाघर में फिल्म 'रामायण' देखने पहुंचे थे। वे शहर के पी स्क्वायर थिएटर में फिल्म देखने गए थे। वायरल वीडियो में अमित शाह और उनके बेटे जय शाह थिएटर से बाहर निकलते दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान अमित शाह को वहां मौजूद लोगों और प्रशंसकों से बातचीत करते हुए भी देखा गया। उनके थिएटर पहुंचने और फिल्म देखने का वीडियो सामने आने के बाद यह सोशल मीडिया



पर चर्चा का विषय बन गया। रणबीर कपूर की फिल्म 'रामायण' रिलीज से पहले ही कई वजहों से चर्चा में रही है। फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम की भूमिका निभा रहे हैं, जबकि साई पल्लवी माता सीता के किरदार में हैं। वहीं, यश फिल्म में रावण की भूमिका निभा रहे हैं। फिल्म की कास्टिंग को लेकर सोशल मीडिया पर पहले भी बहस देखने को मिली थी। रणबीर कपूर के पुराने खान-पान से जुड़े बयानों को लेकर कुछ लोगों ने उनके भगवान राम का किरदार निभाने पर सवाल उठाए थे। वहीं, साई पल्लवी के किरदार और फिल्म में दिखाए गए कुछ दृश्यों को लेकर भी आपत्तियां जताई गई थीं। अमित शाह के फिल्म देखने पर यूजर्स ने कसा तंज:-अमित शाह के परिवार के साथ फिल्म देखने की खबर सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर यूजर्स ने अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दीं। कुछ यूजर्स ने उन लोगों पर निशाना साधा, जो पहले फिल्म का विरोध कर रहे थे। एक यूजर ने सवाल उठाया कि अब फिल्म का विरोध करने वाले कट्टर समर्थक क्या अमित शाह का भी बहिष्कार करेंगे? वहीं, कुछ यूजर्स ने टिप्पणी करते हुए कहा कि भगवान राम भाजपा, अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी बड़े हैं। उनके मुताबिक, राम किसी राजनीतिक दल या नेता तक सीमित नहीं है। इस तरह अमित शाह के फिल्म देखने के फैसले को लेकर सोशल मीडिया पर राजनीतिक और धार्मिक बहस शुरू हो गई है। नितेश तिवारी ने किया है फिल्म का निर्देशन:- रणबीर कपूर स्टारर 'रामायण' का निर्देशन नितेश तिवारी ने किया है। फिल्म के निर्माता नमित मल्होत्रा हैं। इसमें रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी माता सीता, यश रावण और सनी देओल हनुमान की भूमिका में हैं।

फिल्म को दो हिस्सों में बनाने की योजना है। इसकी कहानी रामायण के महाकाव्य पर आधारित है। फिल्म के म्यूजिक की जिम्मेदारी ऑस्कर विजेता संगीतकार एआर रहमान और हंस जिमर ने संभाली है। फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच पहले से ही काफी उत्सुकता रही है। अब अमित शाह के परिवार के साथ इसे देखने का वीडियो भी चर्चा में आ गया है।

साल में 972 घंटे देख रहे रील्स,क्या आपको भी रील्स का नशा है, एक्सपर्ट से जानें ये लत छुड़ाने के आसान टिप्स

मुंबई। पूरी दुनिया में सोशल मीडिया यूजर्स की संख्या 5.66 अरब पहुंच गई है। ये डेटा है, ग्लोबल डिजिटल रिसर्च



प्लेटफॉर्म 'डेटा रेपोर्टल' की 2026 की रिपोर्ट का। रिपोर्ट के मुताबिक, एक एक्टिव यूजर हर हफ्ते औसतन 18 घंटे 36 मिनट सोशल मीडिया पर बिताता है-- यानी रोज करीब 2 घंटे 39 मिनट। -यानी साल में करीब 40 दिन। जरा सोचिए, आप किसी जरूरी काम से फोन उठाते हैं। तभी इंस्टाग्राम खोल लेते हैं और सोचते हैं कि सिर्फ 5 मिनट रील्स देखेंगे। लेकिन एक रील के बाद दूसरी और फिर तीसरी। देखते-देखते आधा घंटा, एक घंटा निकल जाता है। बाद में याद आता है कि जिस काम के लिए फोन उठाया था, वह तो हुआ ही नहीं। अगर आपके साथ भी ऐसा अक्सर होता है, बिना वजह बार-बार इंस्टाग्राम खोलने का मन करता है या रील्स देखने के बाद समय बर्बाद होने का एहसास होता है, तो यह रील्स एडिक्शन का संकेत हो सकता है। इसलिए आज 'जरूरत की खबर' में इंस्टाग्राम रील्स एडिक्शन पर बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि-रील्स एडिक्शन के संकेत क्या हैं? रील्स देखने की लत कैसे छुड़ाएं? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. शौनक अजिंक्य, कंसल्टेंट, साइकोलॉजिस्ट, धीरूभाई अंबानी हॉस्पिटल, मुंबई जी के साथ सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- भारत में कितने लोग इंस्टाग्राम पर रील्स देखते हैं? एवरेज टाइम स्पेंड कितना है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- 'डेटा रेपोर्टल' के मुताबिक, 2025 तक भारत में इंस्टाग्राम यूजर्स की संख्या 48 करोड़ से ज्यादा थी। वहीं 'मेटा-आईपीएसओएस' सर्वे में शामिल 89फीसदी जेनज़ी यूजर्स ने बताया कि वे रोज रील्स देखते हैं। सर्वे में शामिल 85फीसदी महिलाओं ने भी रोज रील्स देखने की बात कही। यह सर्वे भारत के 23 शहरों और ग्रामीण इलाकों के 4,000 से ज्यादा लोगों पर किया गया था। वहीं टेक्नोलॉजी पॉलिसी थिंक टैंक 'इस्या सेंटर' के मुताबिक, भारतीय रोज औसतन 3.2 घंटे सोशल मीडिया एप्स पर बिताते हैं। सवाल- इंस्टाग्राम रील्स देखने की आदत कब 'लत' मानी जा सकती है? जवाब- अगर रील्स न देखने पर बेचैनी या चिड़चिड़ापन होने लगे और व्यक्ति दूसरी जरूरी एक्टिविटीज की जगह रील्स को प्रिऑरिटी देने लगे, तो इसे गंभीरता से लेना चाहिए। रील्स देखना समस्या नहीं है। समस्या वो है, जब व्यक्ति चाहकर भी स्क्रॉलिंग न रोक पाए। धीरे-धीरे यह आदत काम, रिश्तों और यहां तक कि हेल्थ पर भी नेगेटिव असर डालने लगती है। इसलिए इसे गंभीरता से लेना जरूरी है। सवाल- इंस्टाग्राम एडिक्टिव क्यों है? जवाब- इसे पॉइंटर्स समझिए- इंस्टाग्राम यूजर की पसंद और पिछली एक्टिविटीज के आधार पर कंटेंट दिखाता है। इसे 'एल्गोरिद्म' कहते हैं। इससे उसके पसंदीदा कंटेंट सामने आते रहते हैं। हर नई रील में कुछ नया, मजेदार या पसंदीदा कंटेंट मिलने की उम्मीद यूजर को अगली रील देखने के लिए प्रेरित करती है।

लाइक्स, कमेंट्स, शेयर और नोटिफिकेशन भी बार-बार एप खोलने की आदत बढ़ाते हैं। ट्रेंड और अपडेट छूट जाने का डर (एफओएमओ) लोगों को बार-बार एप खोलने पर मजबूर करता है। यही वजह है कि कई लोगों के लिए कुछ मिनट रील्स देखने की शुरुआत लंबे समय तक स्क्रॉलिंग में बदल जाती है।





सवाल- लगातार रील्स देखने से ब्रेन पर क्या असर पड़ता है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- लगातार रील्स देखने से ब्रेन को बहुत कम समय में बार-बार नया और स्टिमुलेटिंग कंटेंट मिलता रहता है। पसंदीदा या नया कंटेंट मिलने पर ब्रेन के रिवॉर्ड सिस्टम में डोपामिन जैसे न्यूरोट्रांसमीटर एक्टिव होते हैं।इससे व्यक्ति को अच्छा महसूस होता है और वह अगली रील देखने के लिए प्रेरित होता है। लगातार स्क्रॉलिंग की आदत पड़ने पर ब्रेन बार-बार मिलने वाले इस इंस्टेंट रिवॉर्ड का आदी हो जाता है। इसके कारण लंबे समय तक किसी एक काम पर फोकस करना मुश्किल हो सकता है और बार-बार फोन चेक करने की इच्छा होती है। सवाल- ज्यादा रील्स देखना फोकस और एकाग्रता को कैसे प्रभावित करता है? जवाब- लगातार रील्स देखने से दिमाग को बहुत तेजी से बदलते कंटेंट और छोटे-छोटे वीडियो की आदत पड़ सकती है। इससे लंबे समय तक एक ही काम पर ध्यान बनाए रखना मुश्किल होता है। पढ़ाई, काम या बातचीत के दौरान बार-बार फोन चेक करने की इच्छा भी बढ़ती है। सवाल- कैसे जानें कि रील्स देखने की लत लग चुकी है? जवाब- अगर रील्स की वजह से काम, पढ़ाई, नींद या रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित होने लगे तो यह लत का इशारा है। रील्स एडिक्शन के संकेत:- चाहकर भी खुद को रोक न पाना। समय का पता न चलना। बार-बार फोन चेक करना। काम / पढ़ाई बाधित होना। नींद, दिनचर्या प्रभावित होना। न देखने पर बेचैनी होना। दूसरों से अपनी तुलना करना। बोरियत/उदासी में रील्स देखना। सवाल- रील्स एडिक्शन का हमारी मेंटल और फिजिकल हेल्थ पर क्या असर पड़ता है? जवाब- लगातार रील्स देखने से गर्दन और कंधे में दर्द और आंखों पर असर पड़ता है। वहीं मेंटल हेल्थ की बात करें तो फोकस में कमी, चिड़चिड़ापन, बेचैनी और मूड में बदलाव जैसी समस्याएं हो सकती हैं। रील्स एडिक्शन के संभावित रिस्क:- गर्दन और कंधे में दर्द। ध्यान, एकाग्रता में कमी। स्लीप क्वालिटी खराब। स्ट्रेस और एंजाइटी। तुलना करने की आदत। सिरदर्द, आंखों में थकान। फिजिकल एक्टिविटी में कमी। बेचैनी और चिड़चिड़ापन। मूड में बदलाव। सोशल आइसोलेशन। सवाल- क्या रील्स की लत छोटे बच्चों और किशोरों के लिए ज्यादा खतरनाक है? जवाब- हां, क्योंकि बच्चों और किशोरों का ब्रेन अभी डेवलपमेंटल फेज में होता है। ऐसे में रील्स देखने की आदत उनके व्यवहार, पढ़ाई और मानसिक स्वास्थ्य पर ज्यादा असर डाल सकती है। इससे- पढ़ाई और सीखने पर ध्यान कम हो सकता है। स्क्रीन टाइम बढ़ने से फिजिकल एक्टिविटीज घट सकती हैं। नींद की क्वालिटी प्रभावित हो सकती है। चिड़चिड़ापन और बेचैनी बढ़ सकती है। सोशल मीडिया पर डिपेंडेंसी हो सकती है। वास्तविक दुनिया की एक्टिविटीज और रिश्तों में रुचि कम हो सकती है। सवाल- रील्स देखने की लत नींद को कैसे प्रभावित करती है? जवाब- ज्यादातर लोग सोते समय रील देखते हैं। ऐसे में स्क्रीन की रोशनी और लगातार नया कंटेंट ब्रेन को एक्टिव रखता है। इससे नींद देर से आती है और स्लीप क्वालिटी भी खराब होती है। देर रात तक रील्स देखने से अगले दिन थकान और सुस्ती भी महसूस हो सकती है। सवाल- इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया को छोड़ना इतना मुश्किल क्यों होता है? जवाब- इसे पॉइंटर्स से समझिए- कई बातचीत, ग्रुप और अपडेट्स सोशल मीडिया से ही मिलते हैं। लोगों को लगता है कि इसे छोड़ने पर वे दूसरों से कट जाएंगे। तनाव, बोरियत या अकेलेपन में लोग सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं। लाइक्स, कमेंट्स और नोटिफिकेशन भी इस आदत को मजबूत कर सकते हैं। लंबे समय तक इस्तेमाल के बाद यह डेली रूटीन का हिस्सा बन जाता है। सोशल मीडिया से दूरी बनाने पर शुरुआत में बेचैनी या खालीपन महसूस हो सकता है। इसलिए लोग आसानी से सोशल मीडिया नहीं छोड़ पाते हैं। सवाल- रील्स देखने की लत कैसे कम करें? जवाब- इसके लिए सबसे पहले धीरे-धीरे स्क्रीन टाइम घटाएं। रील्स की लत कैसे छुड़ाएं? ट्रिगर नोटिस करें। किताबें पढ़ें। खुद को बिजी रखें। कोई नया शौक अपनाएं। बाहर समय बिताएं। किसी से बात करें। धीरे-धीरे स्क्रीन टाइम घटाएं। सोने से पहले सुबह उठते ही फोन दूर रखें। इंस्टा न खोलें। एप लिमिटिंग फीचर यूज करें। होम स्क्रीन से इंस्टाग्राम हटाएं। इंस्टा नोटिफिकेशन ऑफ रखें। 'इंस्टाग्राम डिटॉक्स' प्लान बनाएं। कुछ समय के लिए एप डिलीट करें। सवाल- क्या अन्य एडिक्शन की तरह रील्स देखना छोड़ने पर भी विड्रॉअल सिम्पटम्स हो सकते हैं? जवाब- हां, कुछ लोगों में रील्स या सोशल मीडिया का इस्तेमाल अचानक कम करने पर अस्थायी विड्रॉअल जैसे सिंप्टम्स महसूस हो सकते हैं, जैसे कि- बेचैनी और चिड़चिड़ापन। बार-बार फोन चेक करने की इच्छा। बोरियत या खालीपन महसूस होना। रील्स देखने की तेज इच्छा (क्रेविंग)। ध्यान लगाने में परेशानी। मूड स्विंग्स और नींद न आना। सवाल- किस स्थिति में साइकोलॉजिस्ट से सलाह लेनी जरूरी है? जवाब- इन स्थितियों में साइकोलॉजिस्ट से सलाह लें- नींद प्रभावित हो। पढ़ाई, काम पर नेगेटिव असर पड़े। रिश्ते या रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित होने लगे। बेचैनी, चिड़चिड़ापन हो, मूड स्विंग्स हों। कोशिश के बावजूद सफलता न मिले।

आंध्र के डिप्टी सीएम पवन कल्याण का तीसरी बार तलाक,रूसी मॉडल अन्ना कोनिडेला से 2013 में शादी की थी

चेन्नई। आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री और अभिनेता पवन कल्याण तथा उनकी पत्नी अन्ना कोनिडेला ने आपसी सहमति से तलाक लिया है। शादी के 13 साल बाद दोनों ने अलग होने का फैसला किया। उपमुख्यमंत्री कार्यालय के बयान के अनुसार, यह फैसला आपसी समझ और सम्मान के साथ लिया गया। दोनों ने कहा कि वे अच्छे दोस्त बने रहेंगे। पवन कल्याण और अन्ना अपने बच्चों के लिए समर्पित माता-पिता की भूमिका निभाते रहेंगे। बच्चों की खुशी और भलाई दोनों की साझा प्राथमिकता रहेगी। पवन कल्याण ने तीन शादियां की हैं और तीनों ही बार उनका तलाक हुआ है।फिल्मी डेब्यू के एक साल बाद ही पवन कल्याण की शादी उनके परिवार ने नंदिनी से करा दी थी। एक इंटरव्यू में पवन कल्याण ने कहा था, परिवार के कहने पर मैंने रिश्ते को अपना लिया था। कुछ समय हमारे बीच चीजें खराब होने लगी। हर रिश्ते में सब कुछ ठीक नहीं चलता, इसलिए ये अच्छा है कि एक दूसरे से अलग हो जाएं। नंदिनी से तलाक से लेने से पहले पवन अपनी को-स्टार रेनु देसाई के साथ लिव इन में रहने लगे थे। 2004 में रेनू ने बेटे अकिरा नंदन को जन्म दिया। बिना तलाक लिए दूसरी महिला के साथ रहने के कारण नंदिनी ने पवन के खिलाफ बाइगैमी कानून के तहत अदालत में केस दर्ज किया। साथ ही खर्च के लिए उन्होंने तलाक के बाद हर महीने 5 लाख रुपए की



मांग की। बाइगैमी का मतलब किसी का शादीशुदा होते हुए दूसरी शादी करना होता है। नंदिनी ने आईपीसी की धारा 494 के तहत चिरंजीवी, नागेंद्र बाबू और रेनू देसाई सहित परिवार के अन्य सदस्य पर भी केस दर्ज किया। इस केस के बाद 2007 में ही पवन ने नंदिनी से तलाक ले लिया। तलाक के समय पवन ने 5 करोड़ की गुजारा भत्ता दिया था। 2009: दूसरी शादी, पत्नी रेनू नंदिनी से तलाक लेने के बाद पवन ने 28 जनवरी 2009 को रेनू से शादी कर ली। शादी के बाद रेनू ने बेटी आध्या को जन्म दिया। रेनू के साथ अपनी शादीशुदा रिश्ते को शुरू करने के लिए पवन ने क्या कुछ नहीं किया, लेकिन रेनू के साथ भी अपने रिश्ते को बचाने में असफल रहे। शादी के 3 साल बाद ही रेनू ने 2012 में उनसे तलाक ले लिया। इस बार तलाक की वजह अफेयर नहीं था। रिपोर्ट्स ने दावा किया था कि आर्थिक तंगी के दौरान पवन ने अपने भाई नागेंद्र बाबू की मदद की, जो तलाक का कारण बनी। हालांकि, दोनों ने इस बारे में कभी बात नहीं की। पवन ने अपने वकील के जरिए बहुत कोशिश की कि तलाक ना हो, लेकिन वो विफल रहे। जब दोनों को तलाक हुआ तब पवन फिल्म तीन मार की शूटिंग कर रहे थे, जो बॉलीवुड फिल्म लव आज कल की रीमेक है। 2013: तीसरी शादी, पत्नी अन्ना लेजनेवा- रेनू से तलाक लेने के बाद पवन को रूसी मॉडल अन्ना लेजनेवा से प्यार हो गया। एक फिल्म की शूटिंग के दौरान दोनों की मुलाकात हुई थी। रेनू से तलाक के एक साल बाद ही पवन ने 30 सितंबर 2013 में अन्ना से शादी कर ली। इस शादी से पवन बेटी पोलेना अंजना पवनोवा और बेटे मार्क शंकर पवनोविच के पिता बने। तीन शादी करने पर पवन ने कहा था- मेरा तो शादी करने का ही इरादा नहीं था। वो तो वक्त के साथ बस होता गया। एक शादी नहीं चली इसलिए मुझे दूसरे से शादी करनी पड़ी।तीसरी बार तलाक पर कहा- शादी खत्म, लेकिन दोस्त बने रहेंगे:-तलाक के फैसले के बाद पवन कल्याण की ओर से जारी बयान में कहा गया- अपनी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा एक साथ बिताने के बाद हमने आपसी समझ और सम्मान के साथ अलग होने का फैसला किया है। भले ही हमारी शादी खत्म हो गई है, लेकिन हम अच्छे दोस्त बने रहेंगे और अपने प्यारे बच्चों के लिए समर्पित माता-पिता की भूमिका निभाते रहेंगे।

बच्चों की खुशी और भलाई हमेशा हमारी साझा प्राथमिकता रहेगी।

पवन कल्याण और अन्ना कोनिडेला ने अपने शुभचिंतकों से उनके जीवन के इस मुश्किल दौर में प्राइवेसी का सम्मान करने की अपील की। एक्टर पवन कल्याण ने 14 मार्च 2014 को जनसेना पार्टी बनाई थी।

2024 का विधानसभा चुनाव उन्होंने टीडीपी और भाजपा के साथ गठबंधन करके लड़ा था। चुनाव में टीडीपी ने आंध्र प्रदेश की 175 सीटों में से 135, जनसेना पार्टी ने 21 और भाजपा ने 8 सीटें जीती थीं।

पति को मेरा दोस्तों से मिलना पसंद नहीं,कहते हैं, पति-पत्नी के दोस्त, शौक सब एक होने चाहिए, उन्हें कैसे समझाऊं

नोएडा। वैवाहिक जीवन में इस तरह चुनौतियां आना कोई बड़ी चीज़ नहीं महत्वपूर्ण यह हैं की हम उसे हैंडल कैसे करतें हैं ? विषय को समझेंगे एक्सपर्ट- डॉ. जया सुकुल, क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, नोएडा जी से सवाल जवाब के माध्यम से। सवाल- मैं 34 साल की वर्किंग वुमन हूं। मेरी शादी को छह साल हो चुके हैं। हमारे बीच वैसे तो कोई बड़ा झगड़ा नहीं होता, लेकिन एक बात को लेकर अक्सर तनाव रहता है। पति चाहते हैं कि हम अपना लड़ाई बनाने की बजाय इस नजरिए से देखना बेहतर और ज्यादा मददगार होगा कि 'हम दोनों की जरूरतें क्या हैं।' शादी में साथ जरूरी हर समय साथ रहना नहीं। किसी भी स्वस्थ रिश्ते में दो चीजें साथ-साथ चलती हैं- निकटता और स्वतंत्रता। स्वतंत्रता का मतलब है- पर्सनल स्पेस। अगर रिश्ते में सिर्फ निकटता हो और पर्सनल स्पेस न हो तो व्यक्ति घुटन महसूस करने लगता है। वहीं अगर सिर्फ पर्सनल स्पेस हो और जुड़ाव-निकटता न



सारा खाली समय साथ बिताएं। उनका मानना है कि शादी के बाद पति-पत्नी के दोस्त, शौक और सोशल लाइफ भी एक जैसी होनी चाहिए। मुझे ये बात समझ नहीं आती कि दोनों के शौक और सोशल लाइफ एक जैसी होना क्यों जरूरी है। उनके अलावा भी मेरी सोशल लाइफ क्यों नहीं हो सकती? मैं अकेले अपने स्कूल-कॉलेज के दोस्तों के साथ वक्त क्यों नहीं बिता सकती? उन्हें कैसे समझाऊं, क्या करूं? जवाब- सबसे पहले यह समझिए कि आपकी इच्छा गलत नहीं है। शादी का मतलब यह नहीं कि आपकी अपनी पहचान, दोस्तियां और पसंद-नापसंद खत्म हो जाएं। जिस तरह आपके पति आपके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, उसी तरह आपकी अपनी दुनिया भी आपकी मानसिक सेहत और व्यक्तित्व का जरूरी हिस्सा है। इसलिए यह सवाल कि 'क्या शादी के बाद पति-पत्नी की सोशल लाइफ एक ही होनी चाहिए?'– इसका जवाब है, 'नहीं।' हालांकि, यह भी संभव है कि आपके पति आपको कंट्रोल न करना चाहते हों। कई बार ऐसी सोच कुछ अन्य कारणों से भी आती है, जैसेकि- बहुत ज्यादा प्यार असुरक्षा की भावना अकेले पड़ जाने का डर शादी को लेकर बनी पारंपरिक धारणाएं इसलिए इस मुद्दे को 'कौन सही, कौन गलत' की हो तो दूरियां बढ़ने लगती हैं। एक हेल्दी मैरिज में इन दोनों के बीच एक संतुलन होता है। मनोविज्ञान में इसे 'डिफरेंशिएशन ऑफ सेल्फ' कहा जाता है। इसका मतलब है कि दो लोग भावनात्मक रूप से जुड़े रहने के साथ अपनी अलग पहचान भी बनाए रखें। हेल्दी मैरिज की पहचान-क्वालिटी टाइम-साथ समय बिताना। भरोसा-एक-दूसरे पर पूरा विश्वास। पर्सनल स्पेस-अपने दोस्त, अपने शौक। खुला संवाद-अपनी बात खुलकर कहना। बराबरी-साझे फैसले, साझी जिम्मेदारियां। सम्मान-इंडीविजुअल पहचान की रिस्पेक्ट। पार्टनर ऐसा क्यों चाहता है? हर व्यवहार के पीछे कोई-न-कोई भावनात्मक जरूरत होती है। इसलिए पहले खुद से ये सवाल पूछिए कि आपके पति ऐसा क्यों चाहते हैं। क्या उन्हें अकेलापन महसूस होता है? क्या उन्हें डर है कि दोस्त आप दोनों के बीच दूरी बढ़ा देंगे? क्या उनके परिवार में औरतें बहुत पारंपरिक भूमिका में थीं, जिनकी कोई पर्सनल लाइफ नहीं थी? क्या वे यह मानते हैं कि अलग सोशल लाइफ का मतलब रिश्ते में कमी है? अगर हमें किसी भी चीज का ठीक-ठीक कारण समझ में आ जाए तो बातचीत करना और उस समस्या का हल निकालना आसान हो जाता है। सीबीटी का एबीसी मॉडल-कॉग्निटिव बिहेवियर थेरेपी (सीबीटी) का एक आसान टूल है- एबीसी मॉडल। इस मॉडल को ऐसे समझिए-1- Activating Event (घटना) आप दोस्तों से मिलने की बात करती हैं। B- Belief (विश्वास) पति सोचते हैं- 'अगर पत्नी अकेले दोस्तों के साथ जा रही है तो शायद उसे मेरे साथ रहना पसंद नहीं है।' C- Consequence (परिणाम) वे नाराज हो जाते हैं या आप दोनों के बीच बहस शुरू हो जाती हैं। अब इस मॉडल के मुताबिक आपको अपने पति के Belief यानी उनके यकीन को चुनौती देनी है। आपको उन्हें यह समझाना है कि-'दोस्तों के साथ समय बिताना, पति से दूर होना नहीं है।' पार्टनर ये बात कैसे करें? अब सवाल ये है कि उनके मन में बैठे विचारों या उनके यकीन को बदलने के लिए बातचीत कैसे करें। बात करते हुए आपको 'मैं' वाले वाक्यों का इस्तेमाल करना है। बहुत से कपल बातचीत की शुरुआत आरोप से करते हैं, जैसेकि-'तुम मुझे कभी आजादी नहीं देते।' ऐसी बात सामने वाले को डिफेंसिव बना देती है। इसके बजाय 'मैं' वाले वाक्यों का इस्तेमाल करें, जैसेकि-'मुझे अपने पुराने दोस्तों से मिलकर अच्छा लगता है। इससे मैं भावनात्मक रूप से बेहतर महसूस करती हूं। इसका मतलब यह नहीं कि मैं तुम्हारे साथ समय नहीं बिताना चाहती।' इस तरह सामने वाला आपकी भावनाओं को सुनता है, आरोप को नहीं। तुम हमेशा रोकते हो-मुझे दोस्तों से मिलना 'अच्छा लगता है। तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं-मैं चाहती हूं, तुम मुझे 'समझो। तुम गलत हो-क्या बीच का रास्ता निकाल सकते हैं? रिश्ते में बनाएं 'स्पेस एग्रीमेंट'- कई कपल बिना बात किए उम्मीदें बना लेते हैं। बाद में वही उम्मीदें विवाद बन जाती हैं। इसलिए अपने मन से कुछ भी तय करने की बजाय मिल-बैठकर कुछ बातें तय करें– सप्ताह में कितना समय सिर्फ आप दोनों साथ बिताएंगे। महीने में कितनी बार दोनों अपने-अपने दोस्तों से मिलेंगे। आप दोनों कब और कहां साथ जाएंगे और कब अलग-अलग जाएंगे। पहले से इसकी जानकारी देने का तरीका क्या होगा। इस तरह के नियम दोनों के लिए समान होंगे। ACT (एक्सेप्टेंस एंड कमिटमेंट) थेरेपी टूल ACT (एक्सेप्टेंस एंड कमिटमेंट) थेरेपी कहती है कि किसी भी रिश्ते का फैसला डर से नहीं, बल्कि अपने मूल्यों के आधार पर होना चाहिए।इसलिए खुद से ये सवाल पूछिए– मैं कैसी पत्नी बनना चाहती हूं? मैं कैसी इंसान बने रहना चाहती हूं? क्या दोनों बातें एक साथ संभव हैं? इस सवाल का जवाब अक्सर 'हां' होता है। आप एक अच्छी, कमिटेड पत्नी भी हो सकती हैं और अपने दोस्तों से जुड़ी हुई अच्छी दोस्त भी, अच्छी इंसान भी। इन बातों में कोई अंतर्विरोध नहीं है। सीमाएं तय करने से कमजोर नहीं होते रिश्ते-मनोविज्ञान में हेल्दी बाउंड्रीज बहुत महत्वपूर्ण हैं। बाउंड्रीज यानी सीमा का मतलब दीवार खड़ी करना नहीं है। इसका मतलब है– 'यह मेरी व्यक्तिगत जरूरत है और मैं चाहता/चाहती हूं कि आप इसका सम्मान करें।' एक उदाहरण:-'महीने में एक बार मैं अपने कॉलेज फ्रेंड्स से अकेले मिलना चाहती हूं। उसी तरह अगर आप अपने दोस्तों के साथ समय बिताना चाहें तो मुझे भी खुशी होगी।' हेल्दी बाउंड्री:-अपनी जरूरत साफ बताना। सामने वाले की जरूरत सुनना। स्पेस को सम्मान देना। न कंट्रोल करना, न छिपाना। दोनों के लिए बराबर नियम। इमोशनल बैंक अकाउंट भरते रहिए-रिश्तों के विशेषज्ञ अक्सर इमोशनल बैंक अकाउंट की बात करते हैं। अगर रिश्ते में प्यार, सम्मान, समय और भरोसा लगातार जमा होता रहे तो छोटी-छोटी असहमतियों से रिश्ता टूटता नहीं है। इसलिए जब आप दोस्तों से मिलें, उससे पहले और बाद में पति के साथ भी अच्छा समय बिताइए। उन्हें यह महसूस होना चाहिए कि वे आपकी प्राथमिकता हैं। हेल्दी मैरिज में दो लोगों की पहचान एक नहीं होती। वो दो अलग इंसान हैं, दोनों की अलग पहचान है और न पहचानों का पूरा सम्मान है। जो रिश्ता पर्सनल स्पेस और इमोशनल कनेक्शन के बीच संतुलन बना लेता है, वही लंबा और खुशहाल होता है। अगर पति से प्यार और शांति से बातचीत की हर कोशिश नाकाम हो रही है, बार-बार शांत बातचीत के बाद भी वे–दोस्तों से मिलने पर रोक लगाते हैं। हर बार अपराधबोध महसूस कराते हैं। आपकी हर गतिविधि पर नजर रखना चाहते हैं। आपकी सोशल लाइफ धीरे-धीरे खत्म करवाने की कोशिश करते हैं। तो यह सिर्फ दो व्यक्तियों की अलग-अलग पसंद का मामला नहीं है। यह कंट्रोलिंग व्यवहार की दिशा में जा सकता है। ऐसी स्थिति में कपल काउंसलिंग मददगार हो सकती है। किसी निष्पक्ष विशेषज्ञ के सामने बातचीत करने से दोनों अपनी भावनाएं बेहतर तरीके से समझ और समझा पाते हैं।आखिर में एक बात और।किसी भी रिश्ते का लक्ष्य दो लोगों को एक जैसा बनाना नहीं होता। लक्ष्य यह होता है कि दो अलग-अलग लोग अपनी-अपनी पहचान बचाए रखते हुए एक-दूसरे के जीवन को बेहतर बनाएं। अगर आप सम्मान के साथ अपनी जरूरत रखें और उतने ही सम्मान से उनके डर और भावनाओं को सुनें, तो इस मुद्दे का समाधान टकराव से नहीं, बातचीत से निकल सकता है।

स्वत्वाधिकारी
एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड
न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र) 211002 से
मुद्रित एवं सी-41यूपी
एसआईडीसी औद्योगिक
क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।